

૧. સંપાદકીય

‘No nation can be great whose people are narrow in thought or in action.’
- Jawaharlal Nehru

ઓગષ્ટ ૨૦૨૨માં ભારત એની આઝાદીનાં ૭૫ વર્ષ પૂરાં કરશે. આ એક મહત્વનો પડાવ છે. ૭૫ વર્ષનાં લેખાં-જોખાં કરવા માટે આઝાદી મળી ત્યારે આપણી સ્થિતિ શી હતી અને આ ૭૫ વર્ષમાં આપણે કઈ દિશામાં ચાલ્યા, કયા પડકારો આવ્યા, શું મેળવ્યું, શું ગુમાવ્યું, આઝાદી વખતે જે ભારતની કલ્પના હતી એનાથી આપણે કેટલા દૂર ગયા વગેરે બાબતોની નિખાલસ સમજ અને ચર્ચા જરૂરી છે.

આપણે જ્યારે આઝાદ થયા ત્યારની સ્થિતિ પર ખૂબ મર્યાદિત માહિતી મળે છે. બ્રિટિશ ભારત એ આજના ભારત કરતાં રાજકીય રીતે જુદું હતું. સરહદો જુદી હતી. રાજાઓના અંકુશ હેઠળના પ્રદેશો એ નકશામાં ન હતા. આજે જે અખંડ ભારતની વાત આપણે કરીએ છીએ એના કરતાં બ્રિટિશ રાજની સરહદો ઘણી ભિન્ન હતી. એટલે જે માહિતી મોટે ભાગે તત્કાલીન પ્રદેશની આઝાદી પહેલા આપણે ત્યાં ગરીબ ખેડૂત છે એ ત્રણ બાળકો, પત્ની સાથેના કુટુંબની કુલ માસિક આવક રૂ. ૨૭ ની હતી. સરેરાશ આયુ મર્યાદા ૨૭ વર્ષની જ હતી. સાક્ષરતા ૧૬ ટકા હતી, એટલે કે ૧૦૦ વ્યક્તિઓમાંથી ૮૪ વ્યક્તિએ નિરક્ષર હતા. આર્થિક વિકાસનો દર નકારાત્મક હતો અને કાપડ ઉદ્યોગ જેમાં આપણે દુનિયાનું નેતૃત્વ કરતા હતા એ તળિયે જઈ બેઠો હતો. લગભગ ૨૬૪ મિલો અસ્તિત્વમાં હોવા છતાં દુનિયાના કાપડ ઉદ્યોગમાં આપણો હિસ્સો ઘટીને માત્ર ૪ ટકા થઈ ગયો હતો. બીજા ઉદ્યોગનો વિકાસ નહીંવત્ હતો. અસમાનતા અને ગરીબી ધીરે ધીરે માળખાગત બની ગયા હતા. કાયદો હતો પણ તે આપણા હિતની વિરુદ્ધનો હતો અને એથી કાયદાનું શાસન કે કાયદા સુધીની પહોંચ બંને અર્થવિહીન બની ગયા હતા.

આઝાદી પછીનાં ૭૫ વર્ષમાં આ બધું બદલાયું. આજે ભારતમાં ૨૭ની માસિક સરેરાશ આવકના બદલે કુટુંબની સરેરાશ માસિક આવક રૂ. ૨,૨૨૧ છે. ભારતીય અર્થતંત્રનો વિકાસ દર નકારાત્મકથી વધીને ૮ થી ૧૦ ટકાનો થયો છે. સરેરાશ આયુમર્યાદા વધીને ૭૦ વર્ષની થઈ છે. કાપડ ઉદ્યોગમાં બહુ વિકાસ નથી થયો પણ ઔદ્યોગિક ક્ષેત્ર વિકસ્યું છે. લાંબા બ્રિટિશ રાજે ભારતના આત્માને મૂર્છિત અવસ્થામાં રાખ્યો હતો. જે આઝાદીની ચળવળ દરમ્યાન, ગાંધીજીના નેતૃત્વ હેઠળ જાગૃત થયો, દેશ બ્રિટિશ અંકુશમાંથી મુક્ત થયો. મહાત્મા ગાંધીએ આઝાદી પહેલા ૧૯૩૧માં એમની કલ્પનાના ભારતનું ચિત્ર પ્રજા સમક્ષ મૂક્યું હતું. એમના શબ્દોમાં “I shall work for an India in which the poorest shall feel, it is their country, in whose making they have an effective voice, an India in which there will be no high class or low class of people, an India in which all communities shall live in perfect harmony. There can be no room in such an India for the curse of untouchability or the curse of intoxicating drinks & drugs. Women will enjoy the same right as men. Since we will at peace with rest of the world, not exploiting nor being exploited, shall have smallest army imaginable. Our interest not in conflict with the interest of dumb millions will be scrupulously respected. whether foreign or indigenous. This is the India of my dream. I shall be satisfied with nothing less.” ભારત કેવું હોવું જોઈએ એ વિશે એ પછીનાં વર્ષોમાં પણ એમનો આ જ આગ્રહ રહ્યો છે. આઝાદ ભારત સર્વસમાવેશી હોય, એમાં બધાને સમાન તક હોય, શોષણમુક્ત સમાજ હોય, સમાજમાં હોય તે, આર્થિક વિકાસના દર કરતાં વધારે મહત્વના છે. પ્રોફેસર અમર્ત્ય સેનના શબ્દોમાં Development is Freedom. સ્વતંત્રતા ન આપે તે વિકાસ અર્થવિહીન છે.

સ્વતંત્રતા એટલે રાજકીય સંદર્ભમાં કાયદો અને એનું શાસન, કાયદા સમક્ષ સહુ સમાન હોવા, વ્યક્તિગત સલામતી, બધાથી વિરુદ્ધ મત ધરાવવાની / અભિવ્યક્ત કરવાની સ્વતંત્રતા અને ન્યાયતંત્ર સુધીની પહોંચ સ્વતંત્રતા પછી નાગરિક અને સરકાર વચ્ચેનો એક નવો સંબંધ વ્યાખ્યાયિત થયો છે પણ હજી ગાંધીજીની સ્વતંત્ર ભારતની કલ્પનાથી આપણે ખૂબ દૂર છીએ.

આઝાદીની પ્રથમ રાત્રિએ આપણા પ્રથમ વડાપ્રધાન જવાહરલાલ નેહરુએ પણ પોતાના પ્રવચનમાં કહ્યું હતું. “Whither do we go and what shall be our endeavour ? To bring freedom and opportunity to the

(અનુસંધાન પૃ.૨૯ પર...)

यात्रापथ

● प्रकाशक ●	● कर्मनी केडीअे... ●
भारतीय समुदाय शिक्षण संघ	कम विषय
'यात्रापथ' दर ज्ञान्युआरी, अप्रैल, जुलाई, अक्टोबरनी १५ तारीखे रवाना कराय छे. ता. २० सुधीमां जे अंक न भणे तो कार्यालयना सरनामे ज्ञाण करशो.	१. संपादकीय ०१
● कार्यालय ●	२. गाँधी : आदिवासियों की जीवनशैली एवं चुनौतियाँ - ०४
भारतीय समुदाय शिक्षण संघ समुदाय शिक्षण भवन ओई आश्रमरोड, नवजवन प्रेस रोड, अमदावाड-३८००१४	३. स्त्रीओना अधिकारो अने कानूनी शिक्षण १०
फोन : ०७८-२७४३१७४	४. प्रवृत्ति सरिता १६
Email : iscehouse@gmail.com	४.१ प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम १६
Website : http://iscecommunity.org	४.२ स्वातंत्र्यदिननी उजवणी १८
Facebook : iscehouse@gmail.com	४.३ संयुक्त कार्यकर विकास कार्यक्रम १८
वायकोने : आपना प्रतिभावो अने कार्यक्रमोनी विगतो जे भोकलशो, तो आभारी थईशुं.	४.४ २१मुं प्रा.रामलाल परीभ २० स्मृति व्याख्यान
मुद्रक : अर्थ कम्यूटर २०३, मौर्य कोम्प्लेक्स, सी. यु. शाड कोलेज पास, ईन्कमटेक्स, अमदावाड-१४ मो. ८३२७०३६४१४	४.५ संस्थाना ट्रस्टीश्री मंदाभहेन परीभनी २२ भारतना राष्ट्रपति मा. श्री रामनाथ कोविन्द साथे मुलाकात
Subject to Ahmedabad Jurisdiction	५. समुदाय शिक्षणमां अवनवुं २३
	५.१ जेन्डरनी सामाजिक पुनःनिर्मिति २३
	५.२ अेक अनोप्ली शाणा २५
	५.३ आगामी आंतरराष्ट्रीय परिषद २६
	६. पुस्तक परिचय २७
	७. आगामी कार्यक्रमो २८
	७.१ रंगोणी डरीझई २८
	७.२ प्रश्नोत्तरी (लोकविज्ञान) २८

Everything in India attracts me. It has everything that a human being with the highest possible aspiration can want.'

- Mahatma Gandhi

गाँधी, आदिवासियों की जीवनशैली एवं चुनौतियाँ

- डॉ. पुष्पा मोतियानी*

“महात्मा गाँधी के स्वराज की व्याख्या यह थी कि लोगों की अहिंसक शक्ति में वृद्धि और संगठन द्वारा सभी प्रकार के शोषण और असमानता से लोगों को मुक्ति। यहाँ लोगों शब्द का अर्थ भारत के आदिवासी और बिन आदिवासी निवासियों के बीच में कोई भेदरेखा करता नहीं था।”

A.K. Bose, Culture and Society in India, New York, 1967 Page : 197

विश्व के इतिहास में कोई भी ऐसा नेता, महापुरुष, महात्मा अथवा समाज सुधारक नहीं हुआ है, जिसने तीन महाद्वीपों एशिया, अफ्रीका एवं यूरोप में पढाई एवं कार्य किये हो - ऐसे गाँधी बीसीवीं सदी के विरल (विशेष) व्यक्ति हुए हैं। उन्होंने शैक्षणिक, दार्शनिक (Academic Philosopher) एवं व्यवस्था - सर्जक (System-BUILDER) के कार्य किये। उनके कार्य एवं विचार भारत के लिए ही नहीं, सम्पूर्ण मानवजाति एवं ब्रह्मांड के अस्तित्व के लिए जरूरी हैं।

गाँधी ने राजनिति, मूल्य, शांति, समाज, पर्यावरण, अर्थव्यवस्था, आध्यात्मिक वगैरह क्षेत्रों में काम किया। गाँधी ने समाज-सुधार के स्थान पर समाज के लोगों में अभय एवं आत्मविश्वास जगाने हेतु रचनात्मक कार्यक्रम की ब्ल्यू प्रिन्ट (Blue-Print) दी, जो अपने में स्वतंत्र स्थान एवं काल से परे नवसर्जन/नवरचना करने के कार्यक्रम है, जो खंडन की जगह नवरचना पर भार देते हैं। विघटन एवं विनाश की जगह गाँधी की यह कार्यपद्धति समाज नवसर्जन का कार्य अपने आप करती है। सामाजिक क्रांति के इतिहास में गांधीजी की यह कार्यपद्धति अनोखी एवं विशिष्ट हैं।

रचनात्मक कार्यक्रम व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास के साथ-साथ मानव जाति के सम्पूर्ण विकास को समझने की कार्यपद्धति हैं। भारतीय समाज में जातिप्रथा के कारण जो विषमता आ गयी थी और कुछ लोग (भद्र समाज) अवगणना, भेदभाव एवं शोषण जैसी बर्दियों को बढ़ावा दे रहे थे, उन्हें रोकने के लिए गाँधी ने आदिवासियों को अपने कार्यक्रमों में स्थान दिया।

* डॉ. पुष्पा मोतियानी, पूर्व डीन और प्रोफेसर, गांधी दर्शन विभाग एवं शांति संशोधन केंद्र, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद.

“आदिवासियों की सेवा रचनात्मक कार्यक्रम का एक अंग है। इस कार्यक्रम के जुदा-जुदा अंगों की चर्चा करते-करते उनके ठेठ सोलहवाँ नंबर लगा है, लेकिन इससे कोई उनके महत्व को कम न समझे।” (१)

भारतीय समाज को विभिन्न रचनात्मक प्रवृत्तियों में आदिवासी समाज की समस्याओं और प्रश्नों की ओर गांधीजी का ध्यान केन्द्रित होना बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। भारत की भावि समृद्ध समाज के निम्न स्तर पर जीवन जीने वाले और पीड़ित-दलित वर्ग के उद्धार पर निर्भर है, इसे जानने-समझने वाले गांधीजी प्रथम समाज निर्माण (Social Builder) और समाज नवरचना (Reconstruction of Society) करने वाले राजनितिज्ञ और समाज सुधारक थे। कमजोर नीच वाला समाज अधिक समय तक टिक नहीं सकता क्योंकि अगर कमजोरियाँ समय पर सुधारी न जाये तो नीचे की दुर्बलता/कमजोरी समाज के समग्र ऊपर के भाग को खोखला (कमजोर) कर देगी, ऐसा दर्शन गांधीजी का था। इसलिए सर्वोदय के लिए अन्त्योदय पहली सीढ़ी मानते थे। समाज के अंतिम व्यक्ति या निर्बल व्यक्ति का विकास होगा, तभी समाज के सभी वर्गों/व्यक्तियों का विकास होगा जो समाज को सर्वोदय की तरफ ले जाएगा।

अगर हमारे राष्ट्र में रहने वाली हर एक इकाई को इस बात की सजग भान न हो की बाकि के दूसरे सब घटकों या इकाईयों के सुख-दुःख उनके अपने सुख-दुःख हैं और हम सब एक हैं, तो अपने देश की विशालता और विविधता की यह बात ज्यों-ज्यों हमारी समझ में आती जाती है त्यों-त्यों अपनी एक राष्ट्रीयता के दावे को साबित करने का कीतना कठिन है, इसका ख्याल हमें होता जाता है। (२)

गाँधी स्पष्ट मानते थे की आदिवासी प्रकृति के साथ आंतरिक (Intrinsically) रूप से जुड़े हुये हैं। वे जंगल एवं जमीन के संरक्षक हैं। उनकी जीवनशैली प्रकृति के संसर्ग से जुड़ी हुआ है। आदिवासियों की जीवनशैली खान-पान, रहन-सहन, कृषि, आरोग्य, अध्यात्म इत्यादि विभिन्न जीवन के पहलू इसी प्रकृति के संसाधनों पर आधारित हैं। लेकिन समाज में इन्हें न्यायपूर्ण स्थान नहीं मिला है, जिसके कारण वे आम लोगों से जुड़ नहीं पाए हैं। समाज की मुख्यधार से जुड़े न होने पर भी इनकी जीवनशैली

पर्यावरण की रक्षक हैं। आज की जीवनशैली से हटकर स्वाभाविक, प्राकृतिक जीवन ये लोग जीते हैं। स्वतंत्र मिजाज, स्त्री समानता, सहयोग इत्यादि इनके विशिष्ट गुण हैं। अंधश्रद्धा एवं आडम्बरों को दूर कर इन्हें मुख्यधारा से जोड़कर समान गौरव प्राप्त हो, ऐसा प्रयास गांधीजी ने रचनात्मक कार्यक्रम के द्वारा करने का दृढ़ संकल्प किया था।

गांधीजी जॉन रस्किन की पुस्तक ‘Unto this last’ से प्रभावित थे और वे सर्वोदय में मानते थे। सर्वोदय की पहली सीढ़ी अंत्योदय है, ऐसा उनका दृढ़ विश्वास था। जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति अर्थात दलित, पीड़ित, शोषित व वंचित का विकास नहीं होता, तब तक समाज में सर्वोदय की स्थापना करना कठिन ही नहीं, असंभव है। इसलिए उन्होंने रचनात्मक कार्यक्रमों में मजूदरों, आदिवासी, स्त्रियों एवं रक्तपित्तों को स्थान दिया।

“हमारा देश इतना विशाल है और उसमें बसने वाली जातियाँ इतनी ज्यादा और विविध है कि अपने देश के सभी निवासियों को और उनकी दशा के बारे में अच्छे से अच्छे लोग भी जितना उन्हें जान लेना चाहिये उतना जान नहीं पाते।” (३)

गांधीजी ने गुजरात को रचनात्मक कार्यक्रम का केंद्र स्थान बनाया था, उसमें मुख्यतः दक्षिण गुजरात था। यहाँ पर अधिकांश आदिवासी लोग रहते थे, जो प्रकृति की गोद में अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। लेकिन शोषण से तो वो भी प्रभावित थे, इनकी संपत्ति जल, जंगल एवं जमीन पर अंग्रेजों ने आधिपत्य कर लिया था। आदिवासी - स्वतंत्र एवं स्वाभिमानी मिजाज के लोग थे लेकिन छोटे छोटे कबीलों में रहने के कारण संगठित होकर विरोध नहीं कर पा रहे थे।

फिर भी दक्षिण गुजरात के बारडोली गाँव से सविनय भंग की लड़ाई की शुरुआत हो चुकी थी। गांधीजी ने बारडोली से सविनय भंग की लड़ाई शुरू करने का विचार किया क्योंकि इस तालुके के ८० गाँवों में से ६१ गाँवों में राष्ट्रीय शालायें शुरू हो गयी थी और कई घरों में चरखे चलने शुरू हो गए थे। (४)

गांधीजी ने ता. १ फरवरी १९२२ के दिन सविनय भंग की लड़ाई शुरू

करने की उद्घोषणा की लेकिन गोरखपुर जिले के चौरीचोरा गाँव में पुलिस चौकी को जलाकर पुलिस पर हिंसा की गई गांधीजी ने असहयोग आंदोलन स्थगित करने के साथ साथ बारडोली के इस सविनय भंग लड़ाई को शुरू नहीं किया लेकिन इससे पहले कार्यकर्ताओं से पूछा था कि अगर लड़ाई शुरू की जाती तो बारडोली तालुका से कितने लोग सक्रिय भाग लेते ? जवाब मिला, २०००० लोग । उसी समय बारडोली गाँव की जनसंख्या ८८,००० थी, चोथे भाग की जनसंख्या ही भाग ले तो गांधीजी को आश्चर्य हुआ - ज्यादा पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि ६० से ६६ हजार जनसंख्या तो दुबड़ा, चोधरा, डेडिया है अर्थात् जिनको मनुष्य की गिनती में ही नहीं गिना जाता था उनकी थी । जिनको गिना नहीं जा सकता उनको लड़ाई की क्या समझ होगी ? इतनी बड़ी संख्या में जनसंख्या की अवगणना गांधीजी से सहन नहीं हुई और उन्होंने कहा कि भगवान ने अच्छा किया कि लड़ाई बंद रही । तालुका की आधी से ज्यादा जनसंख्या को आप लोग मनुष्य जाति में से निकाल दे तो इसका अर्थ यह हुआ कि तालुका की बाकी आधे लोग लकवा के कारण रह गये । बाकी के आधे लोगों से एक जबरजस्त सल्तनत के सामने लड़ने का हो तो जीत कैसे मिलेगी ? इसमें हमें जमे हुये खून को घूमने का खूब प्रयत्न करने चाहिये और इस कौम में आत्मज्ञान एवं आत्मविश्वास को जागृत करना चाहिये । (५)

गांधीजी के इन उद्गारों से प्रेरित होकर ही नरहरिभाई, शंकरलाल, बेंकर अनसूयाबहन, छगनलाल जोषी, डॉ. त्रिभुवनदास शाह और ईश्वरभाई अमीन, ठक्करबापा आदि ने आदिवासियों के बीच रहकर काम शुरू किया । १९२४ में जुगताराम भी साथ में जुड़े और प्रार्थना, भजन, समूह भवाई आदि कार्यक्रमों के द्वारा अंत्योदय का काम शुरू किया । १९२३ में ठक्करबापा ने आदिम जाति सेवा संघ की स्थापना की, जो आदिवासियों की समभागीदारी से समाज में शिक्षा, सफाई एवं संगठन का कार्य करना चाहती थी । (६)

इसी तरह इस क्षेत्र के सब में कालीपरज के नाम से जानी जाने वाले पीड़ित, शोषित आदिवासी लोगों के बीच गांधीजी ने काम करना शुरू किया और उन्हें रानीपरज का नाम देकर सन्मानित किया तथा रानीपरज परिषद् की रचना भी की । (७)

चौधरी, ढोडीयाँ, गामित, कुंकवा, वसावा आदि का सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक उन्नति करने का ध्येय भी तय किया गया । १८ जनवरी, १९२६ के दिन इस परिषद् की बैठक हुई और रानीपरज भाई-बहनों ने समूह में भाग लिया और इस परिषद् ने आदिवासियों के उत्कर्ष के कार्य शुरू किये । इससे पहले १८९८ में गुजरात के सोनगढ़ में आदिवासी बहनों के लिए संस्था बनायी गयी । १९०४ में रानीपरज में विद्यालय की स्थापना द्वारा शिक्षा का कार्य किया गया । (८)

इन दिनों में क्रिमिनल ट्रायबल एक्ट के तहत आदिवासियों की ठाकोर, पाटनवाडिया कौम को रात में पुलिस चौकी जाकर हाजरी देनी पड़ती थी, उसके कारण इस स्वाभिमानी, स्वनिर्भर लोगों में बदले की भावना आ गयी थी, वे हिंसा में विश्वास करने लगे थे । लेकिन रविशंकर महाराज और जुगताराम दवे के प्रयत्नों से इस एक्ट को समाप्त करवाया गया ।

लेकिन जब औद्योगिकरण एवं उपनिवेशवाद का प्रचार हुआ तब इस सहज, सरल जीवन जीने वाले आदिवासियों के जीवन में कई प्रश्नों एवं समस्याओं ने प्रवेश करना शुरू कर दिया । स्वतंत्रता के बाद भारतीय सरकार की कई नीतियों ने भी (डेम बनाना, विस्थापन समस्या, उद्योगों को कच्चा माल देना) उन्हें स्वाभाविक प्राकृतिक जीवनशैली से वंचित कर दिया ।

इन सब प्रश्नों को गांधीजी एवं उनके अनुयायीयों ने समझ लिया और विभिन्न आंदोलनों, शिक्षा के प्रचार के द्वारा इस प्रकृति में जीने वाली आदिवासियों को कई बदियों से बचाने कार्य शुरू किया ।

॥

आदिवासी लोगों को मूल निवासी के रूप में पहचाना जाता था । मूल निवासी के लिये मुख्यतया आदिवासी अथवा आदिजाति शब्द प्रचलित है, जब कि भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजाति (Scheduled Tribes - ST) शब्द का उपयोग किया गया है । पूरे विश्व के आज मूल निवासी ३७० मिलियन (३७ करोड़) जितनी जनसंख्या कुल ९० देशों के भौगोलिक विस्तार में निवास करती है । जो विश्व की कुल जनसंख्या की ६ प्रतिशत है । इसमें से १६ प्रतिशत लोगों की आर्थिक स्थिति बहुत ही कमजोर है । विश्व के अलग-अलग देशों में निवास करने वाले ये आदिवासी (मूल निवासी) ७०००

जितनी भाषा-बोलियाँ बोलते हैं। इसके उपरांत मूल निवासी प्रजा (आदिवासी) ६००० अलग-अलग जातियों के अनुसार वैविध्यसभर सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किये हुये हैं। (९)

विश्व के साथ साथ भारत के परिपेक्ष्य में देखे तो सम्पूर्ण राष्ट्र में कुल ७०३ जातियों का समावेश अनुसूचित जनजाति में किया गया है, जिनमें ७६ आदिम अर्थात् अति पिछड़ी जातियाँ हैं। भारत की २०११ की जन संख्या में १० करोड़ अर्थात् कुल जनसंख्या की ८ प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचित जनजाति की है। जबकि गुजरात में २०११ की जनसंख्या गिनती (Census) के अनुसार ८९ लाख कुल जनसंख्या का १४.७६ प्रतिशत जितनी जनसंख्या केवल अनुसूचित जनजाति की है जो बनासकांठा, साबरकांठा, आहवा, डांग जिले की पूर्व पट्टी में, सौराष्ट्र, कच्छ और अहमदाबाद जिले में २६ जितनी जातियों के आदिवासी निवास करते हैं। इस लिये राष्ट्र के विकास में इनका योगदान और आवाज होना आवश्यक है। (१०)

आज समग्र विश्व में विकसित और विकासशील राष्ट्रों ने भोगवादी-स्वभाव को लेकर प्रकृति और समग्र मानवजात के सामने भयंकर खतरा उपस्थित किया है। तब मूल-निवासियों (आदिवासी) की जीवनशैली ने पर्यावरण और संस्कृति को बचाया है। इस समुदाय ने विश्व को मर्यादित संसाधनों में भी खुश रहने की जीवन पद्धति दी है। आदिवासी लोग जल, जंगल और जमीन के साथ गहराई तक जुड़े हुये हैं और खूब ही अन्तराल क्षेत्र (विस्तार) में अति कम साधनों के बीच अपना जीवन व्यतीत करते हैं। उनकी सामाजिक, आर्थिक और आरोग्य की स्थिति बहुत ही कमजोर है। उन्होंने कई संघर्षों के बीच में अपना अस्तित्व टीका कर रखा है।

आदिवासियों का जीवन प्रकृति के आंचल में कई मूल्यों के साथ जीवंत है। आदिवासी प्रकृति की गोद में जीने वाली कौम है एवं प्रकृति की साधन-सामग्री से अपना जीवन व्यतीत करते हैं। इनके समाज में स्त्रियाँ भी समानता एवं स्वतंत्रता का जीवन जीती हैं। उनका पहनावा पुरुषों की भांति है। वे भी जंगल में जाकर पेड़ पर चढ़कर प्राकृतिक सामग्री इकट्ठी करती हैं। पुरुषों की भांति सभी प्रवृत्तियाँ में भाग लेती हैं, और घर की चार दीवार में बंद नहीं रहती। आदिवासी समाज में पर्दा प्रथा नहीं है। वधु आवता अंक...

उ. स्त्रीओना अधिकारो अने कानूनी शिक्षण

— डॉ. रेखा એમ. પટેલ*

विश्वमां मानवजातिमे आज दिवस सुधी मानवजवनने सुभरूप, सरण तेमज वधु सारु बनाववा तथा समाज जवनने सुयारु रूपथी यलाववा माटे कायदाओ, नीति-नियमो बनाव्या छे. आम जेवा जठमे तो मानवजवन ने व्यवस्थित रीते जणववा माटे अने संबंधोना नियमन माटे मानवीओमे कायदा धर्या छे. आवा कायदा द्वारा मानव सुमदायनी अने ते समुदायनी दरेक व्यक्तिनी भराभ शक्ति पर काबू मेणववामां धरे अंशे सङ्गता प्राप्त थई छे.

समाज जवनना रथनां बे यको अटले स्त्री अने पुरुष. समाज जवनना आ बे यकोने अेक भीज साथे जेडी राखवा न्याय, समान तक, समान लाभो, समान व्यवस्था, समान सामाजिक स्थान, समान सामाजिक मोलो मणे ते माटे साम्यतापूर्ण नियमो धरवानो कायदाविदोमे प्रामाणिक प्रयत्न कर्यो छे. सामाजिक चिंतको, संतो, आध्यात्मिक पुरुषो, ज्ञानीओ, नीतिशास्त्रीओ, विधिशास्त्रीओ, झिलसूझोमे पश स्त्रीने मात्र पुरुष समोवडी नही, परंतु स्त्रीने पश जन्मजात पुरुष समान दरज्जे आपवानो अर्थपूर्ण प्रयत्न कर्यो छे.

आजना वैज्ञानिक युगमां शिक्षण वधवानी साथे साथे स्त्रीओनी महत्ता अने प्रतिष्ठा उत्तरोत्तर वधवा लागी छे. स्त्री समाजनी आ प्रगति अने जगृतिनो यश आर्वाचीन शिक्षणने झणे जाय छे. जे के प्राचीन समयमां पश स्त्रीओनी महत्ता स्वीकारायेली ज छे. आपणामां कहेवत छे.

‘ज्यां नारीनी पूजा थाय, त्यां लक्ष्मीनो वास रहे छे’

अनसूया के अरुंधती, सीता, शकुन्तला वगैरे... नारी महत्ताना प्रतीको हता. परंतु प्राचीन काणमां केणवणीनी मर्यादा हती, ज्यारे आजना आ केणवणीना युगमां राजकीय क्षेत्रे जेठमे तो ईंदिरा गांधी, मागरिट आल्वा, मागरिट थेयर, सुष्मा स्वराज, तंडार नायक, सोनिया गांधी आवां असंख्य के अगणित नामो छे. आ उपरांत कल्पना चावला, मुंभर्णना दोढ लाभ टेकसी

* डॉ. रेखा એમ. પટેલ આસિસ્ટન્ટ પ્રોફેસર, ડિપાર્ટમેન્ટ ઓફ લો, ઉ.ગુ. યુનિવર્સિટી, પાટણ

ડ્રાઈવરોમાં એક માત્ર ટેક્સી ડ્રાઈવર કંચન ગાવડે વડોદરાની ફ્લાઈંગ કલબમાં ઈન્સ્ટ્રક્ટર (કોમર્શિયલ પાયલોટ) શ્રદ્ધા દેસાઈ વગેરે ચિરસ્મરણીય છે. આજે બહેનો કલેક્ટર કે કમિશનર બની શકે છે. અને હવાઈદળ પણ બહેનોને આવકારે છે.

● સ્ત્રીઓને કાનૂની શિક્ષણ શા માટે ?

શરૂઆતથી જ ભારતીય સમાજની વ્યવસ્થા એ પ્રકારની રહી છે, કે સ્ત્રીઓને હંમેશાં પુરુષથી ઊંચાની કક્ષાની માનવામાં આવે છે. આ કારણે જ સ્ત્રીઓને રક્ષણ માટે તેઓને કેટલાક કાયદાકીય અધિકાર આપવામાં આવ્યા છે. પરંતુ સ્ત્રીઓને પોતાના આ અધિકારો વિશે જાણકારી છે ખરી ? આપણા સમાજમાં વર્ષોથી સ્ત્રી અને પુરુષ વચ્ચેનો ભેદભાવ પરંપરાગત રીતે ચાલ્યો આવ્યો છે. ભેદભાવથી થતાં અન્યાયને દૂર કરવા માટે સ્ત્રીઓને કાયદાકીય અધિકારો બક્ષવામાં આવ્યા છે. પરંતુ તેની યોગ્ય જાણકારી કે જ્ઞાનના અભાવે જ સ્ત્રીઓ પોતાની જાતને હજુ આજે પણ નબળી, અસહાય અને ઉપેક્ષિત માની રહી છે. મહિલાઓને કાયદા દ્વારા આપવામાં આવેલ અધિકારો વિશેની માહિતી ખૂબ ઓછી છે.

પુરુષ પ્રધાન સમાજમાં સ્ત્રીઓની સમાનતા માટે ઘણી ચર્ચાઓ, સંશોધનો થાય છે. છતાં તે ફક્ત દેખાવ પૂરતા જ અને કાગળ ઉપર હોય તેવું ઘણીવાર લાગે છે. સ્ત્રીઓને પોતાના ઉપર થતાં શારીરિક માનસિક અત્યાચારોથી રક્ષણ મેળવવા કાનૂની જાણકારી હોતી નથી. પરિણામે કાનૂન અને તેની જોગવાઈઓ કાયદાપોથીના બે પૂંઠાં વચ્ચેની વાત બની જાય છે. આમ ન થાય અને સ્ત્રીઓ પોતાના માટે બનાવેલ કાયદાઓનો ઉપયોગ કરી શકે તથા લોકો દ્વારા તેનો જે ગેરઉપયોગ થાય છે તે અટકાવી શકાય તે માટે અભણ હોય કે ભણેલી મહિલા હોય કે વ્યાવસાયિક હોય, તેને કાયદાનું સામાન્ય જ્ઞાન તો હોવું જ જોઈએ. અહીં મહિલાઓને સ્પર્શતા કેટલાક પાયાના અધિકારો વિશે જાણકારી આપવામાં આવી છે.

● દહેજ વિરુદ્ધ અધિકાર :

દહેજ પ્રથાનો ઈતિહાસ પ્રાચીન છે. આધુનિક સમયમાં દહેજ પ્રથાને પહેરામણી તથા પૈઠણ તરીકે ઓળખાય છે. મેક્સરેડીના જણાવ્યા પ્રમાણે

“સાધારણ રીતે દહેજ એવી સંપત્તિ છે કે જે પુરુષ

લગ્ન સમયે પોતાની પત્ની અથવા તેનના કુટુંબ પાસેથી મેળવે છે”

ઉપરોક્ત રીતે જોતાં જાણે કે લગ્ન સમયે પતિ દ્વારા પત્નીનાં માતા-પિતા પાસેથી માંગવામાં આવતી મિલકત એ પતિનો અધિકાર હોય તેવું હાલ પ્રવર્તી રહ્યું છે. દહેજ એક અભિશાપ છે. દહેજ ના પરિણામે સ્ત્રીઓને ઘણાં અત્યાચારો તથા યાતનાઓ ભોગવવી પડે છે. યાતના તો ઠીક તેને મૃત્યુનો સામનો પણ કરવો પડે છે. આ દૂષણને રોકવા મોટ દહેજ આપવું-લેવું તથા માંગણી કરવી તે ગુનાહિત કૃત્ય ગણીને સજાને પાત્ર ગણવામાં આવ્યું છે તે માટે દહેજ અંગેનો કાયદો-૧૯૬૧માં ઘડવામાં આવ્યો છે. આ કાયદો અસ્તિત્વમાં આવ્યો ને પચાસ વર્ષ થયા હોવા છતાં સેમિનારોનું આયોજન કરીને સ્ત્રીઓને આ અંગે માર્ગદર્શન આપવું પડે એ જ દર્શાવે છે, કે આપણો સમાજ દહેજ વિરોધી-કાયદાની અમલવારી અંગે કેટલો ઉદાસીન છે !

કાયદામાં આ અંગેની જોગવાઈ જોઈએ તો આ ગુનામાં જામીન આપવામાં આવતા નથી અને તરત જ ધરપકડ કરવામાં આવે છે.

- જો કોઈ વ્યક્તિ સ્ત્રીને હેરાન કરે કે સંપત્તિ કે રોકડ માટે દબાણ કરે તો તે, ફૂરતા માનવામાં આવે છે.

- દહેજ અંગેની માંગણી કરી હોય તો વર તેમજ માતા-પિતાને જેલની સજા પણ થઈ શકે છે.

કાયદા દ્વારા ઉપરોક્ત જોગવાઈઓનો અમલ આપણે સ્ત્રીઓને સાથે રહીને સંગઠિત થઈને કરાવવો જોઈએ દહેજની સમસ્યામાં કેન્દ્ર સ્થાને સ્ત્રી જ છે. તે જ તેનો સૌથી વધુ ભોગ બને છે. સ્ત્રી જ સમસ્યાનો ઉકેલ પણ લાવી શકે છે : દહેજ નહીં આપીને અને દહેજ નહીં માંગીને.

● સ્ત્રીધનનો અધિકાર :

કન્યાના લગ્ન સમયે કન્યાને તેનાં માતા-પિતા, ભાઈ-બહેન, સગાં-સંબંધી તથા સાસરા પક્ષે પતિ ગૃહેથી પગે લાગવા જેવા રિવાજો નિમિત્તે આપવામાં આવેલ રોકડ, ઘરેણાં, વસ્તુઓ તેમજ ભેટ સોગાદોને સ્ત્રીધન કહેવામાં આવે છે, જે સ્ત્રીની અંગત એટલે કે વ્યક્તિગત માલિકીની મિલકત ગણવામાં આવે છે. તેના પર ફક્ત સ્ત્રીનો જ અધિકાર છે. છૂટાછેડા થયા પછી પણ તેને તે ધન મેળવવાનો અધિકાર છે. સ્ત્રી કોર્ટ દ્વારા પોતાનું સ્ત્રીધન મેળવી શકે છે.

● ભરણપોષણનો અધિકાર :

સ્ત્રીઓને મળતા અધિકારોમાં બહુ જાણીતો અધિકાર એ આ ભરણપોષણનો અધિકાર છે. જ્યારે કોઈ પરિણીત સ્ત્રીની એનો પતિ ઉપેક્ષા કરે, શારીરિક કે માનસિક ત્રાસ આપીને ઘરમાંથી કાઢી મૂકે, ત્યારે પત્ની કલમ ૧૨૫ મુજબ પતિ પાસેથી ભરણ-પોષણની માંગણી કરી શકે છે.

જ્યાં સુધી એ બીજા લગ્ન ન કરે, ત્યાં સુધી અપાતું ભરણપોષણ બંધ કરી શકાતું નથી. તાજેતરમાં સુપ્રિમ કોર્ટે આપેલ ચુકાદા પ્રમાણે છૂટાછેડા લીધેલી સ્ત્રી જ્યાં સુધી પુનઃલગ્ન ન કરે ત્યાં સુધી તેના પ્રથમ પતિ પાસે ભરણ-પોષણ મેળવવાનો અધિકાર છે.

- વૃદ્ધ માતા પોતાનાં પુત્ર-પુત્રી પાસેથી ભરણપોષણ મેળવી શકે છે.

- પુત્રી પણ તેના લગ્ન થાય ત્યાં સુધી પોતાના પિતા પાસેથી ભરણપોષણ મેળવી શકે છે.

● બંધારણીય અધિકારો :

આપણા દેશનું બંધારણ એ આપણા માટે પવિત્ર દસ્તાવેજ સમાન છે. તેમાં મહિલાઓને બંધારણીય અધિકાર આપવામાં આવ્યા છે. યુનાઈટેડ નેશન્સ દ્વારા માનવ અધિકાર અંગે જે ઘોષણાપત્ર જાહેર કરેલું છે તેના અનુસંધાને આપણા બંધારણમાં અનુચ્છેદ-૧૪માં કોઈપણ જાતના ભેદભાવ વગર મહિલાઓને કાયદા સમક્ષ સમાનતાની ખાતરી આપવામાં આવેલી છે.

અનુચ્છેદ-૩૮માં પુરુષ અને સ્ત્રી નાગરિકોને આજીવિકાનું પૂરતું સાધન મેળવવાનો સમાન અધિકાર રહેશે અને પુરુષ અને સ્ત્રી બન્નેને ‘સમાન કામ સમાન વેતન’ મુજબ એક સરખું વેતન મળશે.’

આ ઉપરાંત બંધારણમાં જણાવેલ મૂળભૂત ફરજોમાં પણ સ્ત્રીઓને લગતી જોગવાઈ કરવામાં આવેલી છે. જેમાં એ ફરજ મૂકવામાં આવેલી છે, કે સ્ત્રીઓના ગૌરવને હાનિકારક હોય તેવા કોઈપણ વ્યવહાર કરવા નહીં. આ ઉપરાંત બંધારણના અનુચ્છેદ-૧૫માં સ્ત્રી તરફી કાયદા ઘડવાની રાજ્યોને છૂટ આપવામાં આવેલી છે.

● પોલીસના સંબંધમાં અધિકાર :

જો સ્ત્રી ફરિયાદ કરવા જાય અને પોલીસ થાણામાં હાજર પોલીસ જો સ્ત્રીની ફરિયાદ નોંધવાનો ઈન્કાર કરે તો તે પોલીસ ઈન્સ્પેક્ટર, કલેક્ટર અથવા મુખ્યમંત્રીને પત્ર લખીને અથવા મેજિસ્ટ્રેટને ફરિયાદ કરી શકે છે.

આ ફરિયાદ લેખિત સ્વરૂપે યા મૌખિક રૂપમાં હોઈ શકે છે.

- કોઈપણ મહિલાની ઝડતી મહિલા પોલીસ જ લઈ શકે છે. એટલું જ નહિ, પણ સ્ત્રીને પૂછપરછ માટે પોલીસ સ્ટેશને લઈ જવા મજબૂર કરી શકાતી નથી.

- દિવસ આથમ્યા પછી સ્ત્રીની ધરપકડ કરી શકાતી નથી કે તેને પોલીસ લોક-અપમાં રાખી શકાતી નથી.

● વ્યવસાયી મહિલાઓના પ્રસૂતિ તથા અન્ય અધિકાર :

સ્ત્રીઓને પુરુષનાં સમાન કાર્યો માટે પુરુષો જેટલું જ વેતન તેમજ મજૂરી મેળવવાનો અધિકાર છે. છતાં સ્ત્રીઓને તેમની શક્તિ ઉપરાંતનું કામ કરવા માટે ફરજ પાડી શકાતી નથી. અઠવાડિયામાં એક દિવસની રજા આપવી ફરજિયાત છે. નિર્ધારિત સમય કરતાં વધારે સમય કામ કરવા માટે ઓવર ટાઈમ મેળવવાનો સ્ત્રીઓને અધિકાર છે. ગર્ભાવસ્થા, બીમારી તથા પ્રસૂતિની સુવિધા નિયમાનુસાર મળવી જોઈએ.

પ્રસૂતિ સુવિધા ધારો-૧૯૬૧ અનુસાર મહિલા કર્મચારીને પ્રસૂતિના ૬ અઠવાડિયા પહેલાં અને પ્રસૂતિના ૬ અઠવાડિયા પછી એટલે કે ત્રણ મહિના માટે રજા મેળવવાનો અધિકાર છે. પરંતુ સ્ત્રીએ દરેક વર્ષમાં ઓછામાં ઓછા ૧૨૦ દિવસ સુધી કાર્ય કરેલ હોવું જોઈએ. ગર્ભાધાન દરમ્યાન જો કોઈ બીમારી હોય તો તેના ઈલાજ માટે એક મહિનાની અલગ રજા વેતન સાથે મળી શકે છે.

● ફેક્ટરી એક્ટ અન્વયે અધિકાર :

સ્ત્રીઓ પાસેથી ફેક્ટરીમાં સાંજના ૭ વાગ્યાથી સવારના ૬ વાગ્યા દરમ્યાન કોઈપણ પ્રકારનું કામ કરાવી શકાતું નથી. સતત પાંચ કલાક પણ કામ લઈ શકાય નહીં. સ્ત્રીઓ માટે અલગ ટોયલેટ-લેટ્રિન તથા કપડાં ધોવાનું સ્થળ તથા આરોગ્યને લગતી સુવિધા ફેક્ટરીના સ્થળે હોવી જોઈએ. જે સ્થળે ૩૦થી વધારે સ્ત્રીઓ કામ કરતી હોય તેવી ફેક્ટરીમાં બાળકોની સારસંભાળ માટે ઘોડિયાઘર હોવું જોઈએ.

આ તમામ સુવિધા જો ન મળે તો કામદાર અધિકારી, કામદાર પંચ, પંચાયત તેમજ સેવાભાવી સંસ્થાઓની મદદ મહિલાઓ મેળવી શકે છે.

આ ઉપરાંત ઘણા અલગ-અલગ કાયદાઓ દ્વારા સ્ત્રીઓને અધિકારો આપવામાં આવ્યા છે. જેમકે આજકાલ છેડતીની સમસ્યા વધુને વધુ જોર પકડી રહે છે. જો કોઈ પુરુષ સીટી મારે, ઈશારા કરે, ગમે તેમ બોલે, કે કોઈ પણ પ્રકારનું અસભ્ય વર્તન સ્ત્રી સમક્ષ કરે તો એ ભારતીય ફોજદારી ધારાની કલમ ૩૪૫ હેઠળ સજાને પાત્ર અપરાધ બને છે. આ ઉપરાંત અનૈતિક વેપાર અટકાવવા ધારો ૧૯૫૬ પ્રમાણે કોઈપણ સ્ત્રીને અનૈતિક કૃત્ય કે વેપાર કરવા ફરજ પાડી શકાતી નથી. આ બાબતે ઉત્તેજન આપનાર કે મદદ કરનાર વ્યક્તિઓને પણ ગુનેગાર ગણીને સજા થઈ શકે છે. ‘ભારતીય ફોજદારી કાયદા’માં પણ સુધારો કરી નવી કલમો ઉમેરીને દહેજ મૃત્યુ અંગે જોગવાઈ કરવામાં આવેલી છે. તથા આ જ કાયદામાં સ્ત્રીઓની ઉપર બળાત્કાર, વ્યભિચાર, દ્વિપત્નીત્વના ગુના સંબંધી જોગવાઈઓ કરવામાં આવેલી છે.

અંતમાં એટલું સ્પષ્ટ છે કે સ્ત્રીઓ અંગેના સમાજના વલણમાં ફેરફાર થયો છે. મહિલાઓ વિશેના કાયદાની જોગવાઈઓ, તેની ઉપરનાં સંશોધનો, વિવિધ અદાલતોના ચુકાદાઓ વગેરે અંગે જાણકારી હોય તો, સ્ત્રીઓ પોતાના ન્યાયિક અધિકારોને જાળવી શકે. પરંતુ હકીકત એ છે કે જો સ્ત્રી પોતાનામાં વિશ્વાસ રાખશે તો જ આ દુનિયામાં એ ટકી શકશે, નહીં તો પામર અને બિચારી જ બની રહેશે. સ્ત્રીનું ગૌરવ સ્ત્રીએ જાતે જ વધારવાનું છે.

આપણા સમાજમાં ખૂણો પાળતી કે દુઃખિયારી સ્ત્રીઓને જો હડધૂત કરવામાં આવે, અપવિત્ર ગણવામાં આવે તો એવી સ્ત્રીઓએ કાયદાના પુસ્તક હાથમાં લીધા સિવાય બીજો કોઈ ઉપાય નથી, અને જો સ્ત્રીઓ તેમ નહીં કરે તો આ પુરુષપ્રધાન સમાજમાં આંસુ સાર્યા સિવાય બીજો કોઈ રસ્તો એની પાસે રહેશે નહીં. સ્ત્રી અન્યાય સામે માત્ર વાતો કે ચર્ચા જ નહીં, પરંતુ છેક સુધી લડી લેવાની તૈયારી રાખવી પડશે તથા જ્યાં સ્ત્રી સામે અન્યાય દેખાય ત્યાં સમાજના અને રાજ્યના વિવિધ સત્તા કેન્દ્રોમાં ગમે તેટલી હાડમારી કે અડચણ હોય તો પણ સ્ત્રીઓએ પ્રવેશ કરવો પડશે અને એ માટે કાયદા અને અધિકારોની જાણકારી મેળવી તેનો લાભ લેવો પડશે.

૪. પ્રવૃત્તિ સરિતા

૪.૧ સ્વરાજની લડત- પ્રશ્નોત્તરી કાર્યક્રમ

સ્વાતંત્ર્ય દિને ભારતના ઈતિહાસને યુવાનો જાણે અને સમજે તે ઉદ્દેશ્યથી ભારતમાં આઝાદીની લડત વિશે ૫૦ પ્રશ્નો તૈયાર કરી ઓનલાઈન પ્રશ્નોત્તરીનો કાર્યક્રમ રાખ્યો હતો, જેમાં ૯૨ લોકોએ ભાગ લીધો. તેમાં ૪૧ બહેનો અને ૫૧ ભાઈઓ જોડાયાં હતાં. તમામ પ્રશ્નોના ચાર વૈકલ્પિક જવાબ આપ્યા હતા અને ભાગ લેનારે તેમાંથી સાચા જવાબ પર ટિક કરવાની હતી.

ઉપરોક્ત કાર્યક્રમમાં જે જવાબો મળ્યા તેમાં ૪૦ થી વધારે સાચા જવાબ કોઈ આપી શક્યું નથી. ૪૧ ટકા પ્રતિસ્પર્ધીઓના ૨૦ થી ઓછા સાચા જવાબ છે. વ્યક્તિગત સવાલોમાં જુઓ તો “તુમ મુજે ખૂન દો મેં તુમ્હે આઝાદી દૂંગા” અવતરણ વિશેની જાણકારી ૮૦ ટકા કરતા વધારે પ્રતિસ્પર્ધીઓમાં જોવા મળી છે. આ અંકના વાચકો પણ જો પોતાના જ્ઞાનને ચકાસવા માગતા હોય તો અહીં ૫૦ સવાલ આપ્યા છે :

- ૧) શ્રી વલ્લભભાઈ પટેલને ‘સરદાર’નું બિરુદ કોણે આપ્યું ?
- ૨) “હિન્દ સ્વરાજ” પુસ્તકના લેખક કોણ હતા ?
- ૩) ‘કેસરે હિન્દ’ ની ઉપાધિ ગાંધીજીએ ક્યારે ત્યાગી હતી ?
- ૪) સત્યાગ્રહ એટલે શું ?
- ૫) અંગ્રેજ સરકારે બારડોલીના ખેડૂતો પર કરવેરામાં કેટલા ટકા વધારો કર્યો હતો ?
- ૬) કયા આંદોલન દરમ્યાન કાશી વિદ્યાપીઠ, બિહાર વિદ્યાપીઠ, જામિયા મિલિયા ઈસ્લામિયા, ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ જેવી રાષ્ટ્રીય સંસ્થાઓની સ્થાપના થઈ ?
- ૭) કોની અધ્યક્ષતામાં કોંગ્રેસે લાહોર મુકામે અધિવેશન બોલાવ્યું ?
- ૮) દાંડીકૂચનો પ્રારંભ કયાં દિવસે થયો ?
- ૯) કયા દિવસે ‘પૂર્ણ સ્વરાજ’ની ઘોષણા થઈ ?
- ૧૦) કોના નેતૃત્વ હેઠળ દારૂબંધી માટે સુરતમાં પિકેટિંગ થયું. ?
- ૧૧) ગાંધીજી અને અબ્બાસ તૈયબજીની ધરપકડ બાદ ધરાસણા સત્યાગ્રહની આગેવાની કોણે લીધી હતી ?
- ૧૨) મોલાના આઝાદનો જન્મ કયાં થયો હતો ?
- ૧૩) ૧૯૪૦ના કયા અધિવેશનમાં અલગ પાકિસ્તાનની માંગણીનો ઠરાવ પસાર કરવામાં આવ્યો હતો ?

- ૧૪) વ્યક્તિગત સત્યાગ્રહી તરીકે ગાંધીજીએ કોની પસંદગી કરી ?
- ૧૫) ક્રિપ્સ મિશન ભારત આવ્યું ત્યારે બ્રિટનના વડા કોણ હતા?
- ૧૬) પહેલી ગોળમેજી પરિષદ ક્યાં યોજાઈ ?
- ૧૭) ગાંધીજીએ કઈ ગોળમેજી પરિષદમાં હાજરી આપી હતી ?
- ૧૮) ચંપારણના ક્યા ગામમાં રહીને ગાંધીજીએ લડત ચલાવી ?
- ૧૯) ‘સરકાર આપણી માંગણી ન સ્વીકારે તો આપણે મહેસૂલ ભરવાનું નથી’ આવું કહેનાર મહાનુભાવ કોણ હતા ?
- ૨૦) ક્યા આંદોલનમાં ભાગ લેવા માટે વલ્લભભાઈએ વકીલાત છોડી હતી ?
- ૨૧) રોલેટ એક્ટ કઈ સાલમાં આવ્યો ?
- ૨૨) ત્રણેય ગોળમેજી પરિષદમાં ભાગ લેનાર કોણ હતા ?
- ૨૩) ગાંધીજી અને આંબેડકરની વચ્ચે જે સમજૂતી થઈ તેનું નામ શું આપ્યું હતું ?
- ૨૪) આચાર્ય નરેન્દ્ર દવે ? અને જયપ્રકાશ નારાયણ કઈ પાર્ટીના સ્થાપક હતા ?
- ૨૫) જુલાઈ ૧૯૩૭ માં કેટલા પ્રાંતોમાં કોંગ્રેસે તેની સરકાર બનાવી ?
- ૨૬) કોંગ્રેસના અધ્યક્ષ તરીકે સુભાષચંદ્ર બોઝે રાજીનામું આપ્યા બાદ કોને અધ્યક્ષ નીમવામાં આવ્યા ?
- ૨૭) “તુમ મુજે ખૂન દો, મੈ તુમ્હે આઝાદી દૂંગા” આ વાક્ય કોણે કહ્યું ?
- ૨૮) ‘ભારત છોડો’ આંદોલનનો પ્રસ્તાવ કોના નેતૃત્વ હેઠળ પસાર કર્યો ?
- ૨૯) ‘ભારત છોડો’ આંદોલનનો આલેખ કોણે પ્રસ્તુત કર્યો ?
- ૩૦) ‘ઓપરેશન ઝીરો ઓવર’ ના સંદર્ભે ગાંધીજીની ધરપકડ થઈ ત્યારે તેમને ક્યાં રાખ્યા હતા ?
- ૩૧) ‘ઓપરેશન ઝીરો ઓવર’ ના સંદર્ભે જયપ્રકાશ નારાયણને કઈ જેલમાં રાખ્યા હતા ?
- ૩૨) જલિયાંવાલા બાગનો હત્યાકાંડ ક્યારે થયો હતો ?
- ૩૩) ગાંધીજીનો સેવાગ્રામ આશ્રમ ક્યાં આવેલો છે ?
- ૩૪) મુંબઈમાં મળેલી કોંગ્રેસ મહાસમિતિની બેઠકમાં કઈ રાત્રે હિન્દ છોડો આંદોલનના નામથી ઓળખાતો ઐતિહાસિક ઠરાવ પસાર કરવામાં આવ્યો હતો ?
- ૩૫) ‘હિન્દ છોડો’ આંદોલનમાં ક્યા દિવસે ગાંધીજી અને અન્ય નેતાઓની ધરપકડ કરવામાં આવી હતી ?
- ૩૬) કેબિનેટ મિશન ક્યારે ભારત આવ્યું હતું ?
- ૩૭) આઝાદી સમયે ભારતમાં કેટલા દેશી રજવાડા હતા ?

- ૩૮) લાહોર મુસ્લિમલીગ અધિવેશન ક્યારે મળ્યું હતું ?
- ૩૯) હોમરૂલલીગનું ગઠન કોણે કર્યું હતું ?
- ૪૦) “સ્વરાજ મારો જન્મ સિદ્ધ અધિકાર છે” આ વાક્ય કોણે કહ્યું ?
- ૪૧) ક્યા ખેડૂત નેતાએ ગાંધીજીને ચંપારણ સત્યાગ્રહનું નેતૃત્વ કરવા આમંત્રણ આપ્યું હતું ?
- ૪૨) ગાંધીજીના કુશળ નેતૃત્વથી પ્રભાવિત થઈ એમને ‘મહાત્મા’ ની ઉપાધિ કોણે આપી ?
- ૪૩) ખેડા સત્યાગ્રહ પછી કોણે વકીલાત છોડી ગાંધીજીથી પ્રેરાઈ લોકોની સેવા કરવાનું નક્કી કર્યું ?
- ૪૪) ગાંધીજીએ અસહકારનું આંદોલન પાછું ખેંચી લેવાની જાહેરાત કેમ કરી ?
- ૪૫) મુસ્લિમ કોમવાદના પિતા તરીકે કોને ઓળખવામાં આવે છે ?
- ૪૬) લાઠીચાર્જનો આદેશ આપનાર અંગ્રેજ પોલીસ અધિકારી કે જેની હત્યા ભગતસિંહે કરી હતી તેમનું નામ શું હતું ?
- ૪૭) ગુજરાતની ધરતી પરનો સૌ પ્રથમ સત્યાગ્રહ કોને ગણવામાં આવે છે ?
- ૪૮) ગાંધીજીએ ડુંગળી ચોરનું બિરુદ કોને આપ્યું હતું ?
- ૪૯) નાગપુર કોંગ્રેસ અધિવેશનમાં સ્વદેશી ચીજ વસ્તુઓના પ્રચાર માટે ક્યા ફંડમાં એક કરોડથી વધુ રકમ જમા થઈ ?
- ૫૦) આદિવાસીઓના જનનાયક કોણ છે ?

૪.૨ ધ્વજવંદન

ભારતીય સમુદાય શિક્ષણ સંઘના મુખ્ય પ્રાંગણમાં ૭૫મા સ્વાતંત્ર્ય દિન નિમિત્તે ૧૫મી ઓગસ્ટ-૨૦૨૧ના રોજ ધ્વજવંદનનો કાર્યક્રમ રાખવામાં આવ્યો હતો, જેમાં યુવક વિકાસ ટ્રસ્ટ જે અમારી ભગિની સંસ્થા છે અને ધ ઈન્ડિયન એસોસિયેશન ઓફ એક્સપરિમેન્ટ ઈન ઈન્ટરનેશનલ લિવિંગ સંસ્થા પણ જોડાઈ હતી. ભારતીય સમુદાય શિક્ષણ સંઘના ટ્રસ્ટી ડૉ.મંદાબહેન પરીખના હસ્તે ધ્વજ ફરકાવવામાં આવ્યો હતો. ધ્વજવંદનમાં ધોરણ ૯ ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ કુમાર વિનય મંદિરની ૧૦ વિદ્યાર્થીનીઓ, ૬ શિક્ષકો અને ૩ અનુસ્નાતકના વિદ્યાર્થીઓ પણ જોડાયા હતા. ધ્વજવંદન બાદ આ તમામ સાથે સ્વરાજની લડતના સંદર્ભે ઓફલાઈન પ્રશ્નોત્તરી કાર્યક્રમ રાખવામાં આવ્યો હતો.

૪.૩ સંયુક્ત કાર્યકર વિકાસ કાર્યક્રમ

(૧૮ - ૨૧ સપ્ટેમ્બર, ૨૦૨૧. ઉદયપુર, રાજસ્થાન)

સંયુક્ત કાર્યકર વિકાસ કાર્યક્રમ JSDP એ કોનરાડ એડેન્ચોર સ્ટ્રીક્ટુંગ(કાસ)ની સાથે જોડાયેલ ભારતની ભાગીદાર સંસ્થાઓના કાર્યકરોના વિકાસ માટેનો એક મહત્વનો કાર્યક્રમ છે. આ કાર્યક્રમ અંતર્ગત દર વર્ષે ભાગીદાર સંસ્થાઓના કાર્યકરોની ક્ષમતા વધે અને કામ કરવાનો ઉત્સાહ વધે એ દૃષ્ટિએ રાષ્ટ્રના તમામ લોકોને સ્પર્શતા એવા કોઈ એક મુદ્દા પર ત્રણ દિવસની પરિષદ બોલાવવામાં આવે છે. આ વર્ષે ભારતીય સમુદાય શિક્ષણ સંઘ અને યુવક વિકાસ ટ્રસ્ટ અમદાવાદ અને કાસે સંયુક્ત રીતે ૧૮-૨૧ સપ્ટેમ્બર, ૨૦૨૧ દરમિયાન રાજસ્થાનના ઉદયપુર ખાતે આવેલ ફનેહગઢ હોટેલમાં "કોરોના મહામારી અને ટકાઉ વિકાસના ધ્યેયો: અસર, પ્રતિભાવ અને સંભાવના" વિષય પર સંયુક્ત કાર્યકર વિકાસ કાર્યક્રમ યોજ્યો હતો, જેમાં ૧૦ રાજ્યોમાંથી ભાગીદાર સંસ્થાઓના ૪૬ સહભાગીઓએ ઉત્સાહપૂર્વક ભાગ લીધો હતો. આ પ્રસંગે કાસના ભારત નિવાસી પ્રતિનિધિ શ્રી પીટર રીમ્મેલે પણ હાજર રહ્યા હતા. તેમણે આ વિષયના ઔચિત્ય અને વ્યાપનો ખ્યાલ આપતા કહ્યું કે ટકાઉ વિકાસના ધ્યેયો હાંસલ કરવાનું આપણે માટે અનિવાર્ય બની ગયું છે. કાર્યક્રમના મુખ્ય મહેમાન ડૉ. અનિલ ગુપ્તાએ (પદ્મશ્રી, પ્રોફેસર, IIM અમદાવાદ હની બી નેટવર્કના સ્થાપક) ચાવીરૂપ વક્તવ્ય આપ્યું હતું. તેઓએ તેમના વક્તવ્યમાં દેશવ્યાપી રોગચાળો અને તેને અટકાવવા માટે આપણી ભૂમિકા શી હોઈ શકે ? એના વિષે વાત કરી. સાધનોના કરકસરભર્યા ઉપયોગ પર તેમણે ભાર મૂક્યો.

ત્રિદિવસીય આ કાર્યક્રમમાં કુલ ૮ સત્રો હતાં. પ્રથમ સત્રમાં ડૉ. એસ. એન. મિશ્રાએ “વૈશ્વિક ટકાઉ વિકાસના ધ્યેયો પ્રાપ્ત કરવા માટે છેલ્લા દસકાના પ્રયાસોનું વાસ્તવિકતાનું નિરૂપણ કર્યું અને પ્રવર્તમાન પરિસ્થિતિનું સરસ વિહંગાવલોકન કર્યું. તેમજ શ્રેષ્ઠ માનવજીવન માટે ભાવિ માર્ગ ક્યો હોઈ શકે એ વિષય પર ડૉ. વિદ્યુત જોષીએ તલસ્પર્શી ચર્ચા કરી. દ્વિતીય સત્રમાં “અસમાનતા અને ગરીબી” પર ભારત અને વિશ્વના પરિપેક્ષમાં ડૉ. સુદર્શન આયંગર અને ડૉ. કિરણ પંડ્યાએ ચર્ચા કરી. તૃતીય સત્રમાં “મહામારી પછીની ઊભી થયેલી રોજગારી અને તેની આવશ્યકતાઓ અને કૌશલ્યોમાં આવેલ પરિવર્તન” પર શ્રી બાલાકુમાર થંગાવેલુ અને શ્રી વિવેક ચોપરાએ એમના અનુભવોને આધારે કૌશલ્યોની માંગમાં આવેલ માળખાગત પરિવર્તનો-ખાસ કરીને Digitalization લીધે આવેલ પરિવર્તનો પર ચર્ચા કરી. ચોથા સત્રમાં ટકાઉ વિકાસનાં ધ્યેયો અંગે CDS ના ડૉ.નિત્યાનંદે તૈયાર કરેલ તાલીમ મોડ્યુલ

અંગે ચર્ચા થઈ. બીજા દિવસે પાંચમાં સત્રમાં મહામારી અને તેની આરોગ્યસેવાઓના વ્યવસ્થાપન પર પડેલી અસરો અને આપણા ભાવિ પર ICREERના અલી મહેંદીએ ચર્ચા કરી. છઠ્ઠું વ્યાખ્યાન ગાંધીનગર સ્થિત Indian Institute of Public Healthના નિયામક શ્રી દિલીપ માવળંકરે કોરોનાએ જાહેર આરોગ્યના સંદર્ભે ઊભા કરેલા નવા પડકારો અને નીતિ વિષયક ફેરફારોની આવશ્યકતા સંદર્ભે ચર્ચા કરી. સાતમાં સત્રમાં મહામારી દ્વારા ઉદ્ભવતા પડકારોનો સામનો કરવામાં સ્વૈચ્છિક સંસ્થાઓના ફાળા પર ચર્ચા થઈ જેમાં ઉદયપુર સ્થિત સેવામંદિર અને દિલ્હી સ્થિત પ્રિયાએ બે સંસ્થાઓના પ્રતિનિધિઓએ પોતાના અનુભવોની વાત કરી. આઠમાં સત્રમાં સહભાગીઓને ૬ જૂથમાં વહેંચવામાં આવ્યા અને શિક્ષણ, સ્ત્રી પુરુષ સમાનતા, પાણી અને સ્વચ્છતા, આરોગ્ય, આબોહવા અને સ્વૈચ્છિક સંસ્થાઓની કામગીરી વિષે જૂથચર્ચા કર્યા બાદ જૂથ દ્વારા તેની રજૂઆત કરવામાં આવી હતી.

બપોરે જમ્યા પછીની બીજી બેઠકમાં શિક્ષણની વાત થઈ. ટકાઉ વિકાસના ધ્યેયોમાં શિક્ષણ અત્યંત મહત્વનું છે. આ વિષય પર ચર્ચા કરવા પ્રોફે.જે.એસ.રાજપૂત આવ્યા હતા, જેમણે શિક્ષણના ગુણાત્મક પાસાઓને મહામારીએ કઈ રીતે પ્રભાવિત કર્યા છે તેની તલસ્પર્શી ચર્ચા કરી. એમના મતે મહામારીની સૌથી ખરાબ અસર શિક્ષણ ઉપર થઈ છે. પ્રો. અરુણ વકીલ શિક્ષણની ગુણવત્તામાં સુધારો કરવા માટે આપણી શિક્ષણ વ્યવસ્થાઓ અને આપણી ક્ષમતા પર ચર્ચા કરી.

વિવિધ ક્ષેત્રોમાં થયેલી ચર્ચામાં ટકાઉ વિકાસનાં ધ્યેયોને સિદ્ધ કરવા માટે તમામ સંસ્થાઓ દ્વારા તાત્કાલિક કામગીરી કરવાની જરૂરિયાત છે એ વાતે સહમતિ સધાઈના ટકાઉ વિકાસનાં ધ્યેયોને હાંસલ કરવા માટે જે મોડ્યુલ બનાવવામાં આવ્યું છે તે મોડ્યુલનો ઉપયોગ વ્યાપક રીતે લોકોને સંસ્થાઓને તાલીમ આપવામાં થાય તો કદાચ ટકાઉ વિકાસનાં ધ્યેયોને હાંસલ કરી વિનાશ તરફ જતાં વિશ્વને રોકી શકીએ. ગાંધીવિચારના સંદર્ભમાં પણ લગભગ બધા વક્તાઓએ કર્યો.

નોંધ: ઉપરોક્ત તમામ વ્યાખ્યાનો સંસ્થાના યૂ ટ્યુબ (IsceHouse) પર પ્રાપ્ય છે.

૪.૪ ૨૧મું પ્રા. રામલાલ પરીખ સ્મૃતિવ્યાખ્યાન

ગત ૪ સપ્ટેમ્બર, ૨૦૨૧ના રોજ ૨૧મું પ્રા. રામલાલ પરીખ સ્મૃતિ વ્યાખ્યાન ઓનલાઈન યોજાઈ ગયું. વ્યાખ્યાનનો વિષય હતો “પ્રવર્તમાન ભારતમાં ગાંધીવિચાર અને કાર્યરીતિને પુનઃજીવિત કરવાની આવશ્યકતા.”

અને વક્તા હતા એલાન પાસ્કલ નાઝરેથ, જેઓએ સમગ્ર જીવન ભારતીય એલચી કચેરીઓમાં ઉચ્ચાતિ-ઉચ્ચ હોદ્દાઓ પણ સફળતાપૂર્વક જવાબદારીનું વહન કર્યા બાદ, ગાંધીજી તથા તેમણે પ્રબોધેલ અહિંસાના મૂલ્ય પર ચિંતન, મનન સભર લેખન અને પ્રવચનો કર્યા છે. તેમનું પુસ્તક Gandhi's Outstanding Leader દેશની અને વિદેશની અનેક ભાષાઓમાં અનુવાદિત થઈ ખૂબ પ્રસિદ્ધિ પામ્યું છે. તેઓ અહિંસાને એક આત્મિક શક્તિ તરીકે જુએ છે અને દુનિયાના મોટાભાગના પ્રશ્નોનો ઉકેલ એ અહિંસામાં જુએ છે. એમને મતે ગાંધીજીની અહિંસા ક્રાંતિમાં ક્રાંતિ (revolutionized revolution) લાવનાર છે. (વિશ્વની અનેક પ્રખ્યાત અવ્વલ નંબરની યુનિવર્સિટીઓમાં તેઓએ વ્યાખ્યાનો આપ્યાં છે.)

આ પ્રવચન zoom પ્લેટફોર્મ પર આપવામાં આવ્યું, જેમાં દેશના જુદાજુદા ભાગોમાંથી અનેક લોકોએ ભાગ લીધો. યૂ-ટ્યુબ ઉપર પણ આ પ્રવચન પ્રસારિત કરવામાં આવ્યું.

પ્રવચનની શરૂઆતમાં શ્રી નાઝરેથે ૨૦મી સદીમાં થયેલી લોહિયાળ યુદ્ધોની વાત કરી અને આ હિંસા સામે લડવાની એક નવી રીતિ, નવો વિચાર જે ગાંધીજીએ આપ્યો તેની સફળતા પણ બતાવી. ૨૧મી સદીમાં અહિંસાના સ્વીકારની સંભાવનાઓ વચ્ચે અમેરિકા પર આતંકવાદી હુમલો થયો અને દુનિયા ફરી એકવાર બર્બરતા તરફ ખેંચાઈ. છેલ્લાં બે દાયકાઓમાં ૨૦મી સદી કરતાં પણ વધારે હિંસા થઈ છે.

ગાંધીજીએ તિરસ્કાર અને હિંસા ધરાવતા લોકોમાં પરિવર્તન આણવાનો અને બીજી બાજુ હિંસાત્મક વલણના મુખ્ય કારણો શોધી એને ઉકેલવા માટે કામ કર્યું. શ્રી નાઝરેથ દુનિયાના અનેક દેશોમાં થયેલાં યુદ્ધોની આ સંદર્ભમાં ચર્ચા કરી. નૈતિકતા સત્ય, ન્યાય જેવાં મૂલ્યોને એમણે મહત્ત્વનું સ્થાન આપ્યું.

શ્રી નાઝરેથ સર્વવ્યાપી લોભની વૃત્તિ, કોર્પોરેટાઈઝેશન અને હાઈ-ટેક સંશોધનોને પણ હિંસા માટે જવાબદાર ઠેરવ્યા અને ગાંધીજીએ આ બધાથી દેશને- દુનિયાને બચાવવા જે વૈકલ્પિક વિચાર આપ્યા તેની ચર્ચા કરી છે. શ્રમ બચાવતી ટેકનોલોજી, ખેડૂતોના આપઘાતની વધતી સંખ્યા અને બેરોજગારીમાં અનેક દેશોમાં થયેલો વધારો ગાંધીજીની વાત કેટલી સાચી હતી એની સાક્ષી પૂરે છે. હિંસાની જેમ જ આ સદીમાં પ્રસરેલ વાતાવરણમાં ફેરફારો સામે લડવાની રીત પણ ગાંધીવિચાર પાસે જ છે. છેલ્લાં ૫૦ વર્ષોમાં અનેક નવી સંસ્થાઓ ઊભી થઈ છે. વધુને વધુ લોકો એમાં જોડાતા જાય છે. વૈશ્વિક સ્તરે People Power ઊભો થઈ રહ્યો છે.

પણ કમનસીબે ભારતમાં ગાંધીજી અને એમનાં મૂલ્યો — સત્ય, અહિંસા, સામાજિક સંવાદિતા અને છેલ્લામાં છેલ્લા માણસ પ્રતિ એકત્વ-વગેરે ભુલાતું જાય છે અને એની જગ્યા સાંકડો રાષ્ટ્રવાદ લઈ રહી છે. ગાંધીજીમાં માનનારા બધાએ પ્રબુદ્ધ થવું પડશે, લોકોને એમની સત્તા સામે લડવાની શક્તિને સમજાવવી પડશે. સમુદાય શિક્ષણ માટે આ મોટો પડકાર છે. તિરસ્કાર અને અન્યાય સામે આત્મિક શક્તિથી લડતા જાતને લોકોને શીખવવું પડશે.

૪.૫ સંસ્થાના ટ્રસ્ટીશ્રી મંદાબહેન પરીખની

ભારતના રાષ્ટ્રપતિ મા. શ્રી રામનાથ કોવિન્દ સાથે મુલાકાત

આપણા દેશના રાષ્ટ્રપતિ મહામહીમ શ્રી રામનાથ કોવિન્દ તા.૨૬/૨૭ ઓક્ટોબર ૨૦૨૧ના રોજ ગુજરાતની મુલાકાતે આવ્યા હતા. સંસ્થાના ટ્રસ્ટીશ્રી મંદાબહેન પરીખ એમને તા.૨૭ ઓક્ટોબર-૨૦૨૧ના રોજ મળ્યા. મુલાકાત દરમ્યાન એમણે ૧૯૭૦ના દાયકાને યાદ કરતા સ્વ. શ્રી રામલાલ પરીખ સાથેનાં અનેક સંસ્મરણો યાદ કર્યા. સ્વ. રામલાલભાઈની કામ પ્રત્યેની નિષ્ઠા, સમજ અને કાર્યશીલતાની ઊંડી છાપ એમના મનમાં આજે ૪૦ થી વધારે વર્ષ પછી પણ જીવતી છે. રામલાલભાઈએ કરેલા શિક્ષણના પ્રયોગોને જેમાં સમુદાય શિક્ષણ સંઘનો પણ સમાવેશ થાય છે. તેને પણ યાદ કર્યા. સ્વ. શ્રી મોરારજીભાઈ દેસાઈ અને સ્વ. શ્રી રામલાલ પરીખનો વિદ્યાપીઠ પ્રત્યેનો લગાવ અને ગાંધી વિચારમાં શ્રદ્ધાએ એ જમાનામાં એમના જેવા અનેકોને પ્રભાવિત કર્યા હતા. એટલે જ આજથી લગભગ ૫૦ વર્ષ પહેલાની વાત આટલી તીવ્રતાથી અને સહજભાવે વાગોળવામાં આવી. આ આખી ઘટનામાં નોંધપાત્ર એ છે કે એક માણસ જીવનભર સમાજલક્ષી કાર્યોને સમર્પિત રહે. તો એની વિધેયાત્મક અસરો ઊભી થાય છે અને એ અસરો ચિરકાલીન હોય છે. રાષ્ટ્રપતિ જેવા સર્વોચ્ચ સ્થાને બિરાજમાન વ્યક્તિ અંગત રસ લઈ ગાંધીનગરની મુલાકાત ટાણે પોતાનાં સંસ્મરણો વાગોળવાનું પસંદ કરે તે ઘટના રાષ્ટ્રપતિ પ્રત્યે તો આદર ઊભો કરે જ છે, પણ સાથોસાથ ભારતીય સમુદાય શિક્ષણ સંઘ સહિત તમામ રચનાત્મક સંસ્થાઓને સંદેશ આપે છે કે સમર્પણ અને નિષ્ઠાથી કરેલ કામો ગમે તેટલા અવરોધો વચ્ચે પણ પ્રતિઘોષ પામે છે અને સમાજને વિધેયાત્મક શક્તિ અને બળ પૂરું પાડે છે. ભારતીય સમુદાય શિક્ષણ સંઘ માટે આ બનાવ ચિરસ્મરણીય અને પથદર્શક બની રહેશે.

પ. સમુદાય શિક્ષણમાં અવનવું

પ.૧ જેન્ડરની સામાજિક પુનઃનિર્મિતિ

(Social Reconstruction of Gender)

ભારતીય સમુદાય શિક્ષણ સંઘ (ISCE) અને વિલ્ડ ઈન્ડિયા સેક્શન (Women's International League for Peace & Freedom)ના સંયુક્ત ઉપક્રમે પ્રો. કૃષ્ણા આહુજાપટેલ સ્મૃતિ વ્યાખ્યાનમાળાનું પ્રથમ વ્યાખ્યાન તા.૬/૮/૨૦૨૧ ના રોજ ગોઠવવામાં આવ્યું હતું. આ વ્યાખ્યાનનો વિષય હતો 'જેન્ડરની સામાજિક પુનઃનિર્મિતિ (Social Reconstruction of Gender) પ્રો. કૃષ્ણા આહુજાપટેલ મહિલા હક્કો માટે આજીવન લડ્યા. એમની વિશેષતા એ હતી કે તેઓ સંશોધક પણ હતા અને કર્મશીલ પણ. ૧૯૧૫માં સ્થપાયેલી વિલ્ડ ઈન્ટરનેશનલના તેઓ અધ્યક્ષ રહી ચૂક્યાં છે. કાર્યક્રમની શરૂઆતમાં મહારાષ્ટ્ર વિલ્ડના બ્રાન્ચ સેક્રેટરી શ્રી સુખ્માજી પંકુલે વિલ્ડનો પરિચય આપતાં કહ્યું કે ભારતમાં વિલ્ડને પુનર્જીવિત કરવાનું કાર્ય કૃષ્ણાબહેને કર્યું. તેમને એ વાતનો બહુ જ ગર્વ હતો કે આ મહિલાઓની સંસ્થા (વિલ્ડ) ને ગાંધીજીએ માર્ચ ૧૯૩૨ માં જિનીવા ખાતે સંબોધન કર્યું હતું. વિલ્ડ આંતરરાષ્ટ્રીય સ્તર પર યુદ્ધનો વિરોધ અને શાંતિ, સ્વતંત્રતા જેવા વિષયો પર કામ કરનાર પ્રથમ મહિલા સંસ્થા છે.

ભારતીય સમુદાય શિક્ષણ સંઘના ટ્રસ્ટી અને વિલ્ડ ઈન્ડિયા સેક્શનના પ્રમુખ ડૉ.મંદાબહેન પરીખે બધા જ મહેમાનોનું હાર્દિક સ્વાગત કરતાં કહ્યું કે પ્રો. કૃષ્ણા આહુજાપટેલ વિલ્ડ ઈન્ડિયાના પ્રાણવાયુ સમાન હતા. તે વિલ્ડ ઈન્ડિયા સેક્શનનું આત્મબળ હતા અને આજે પણ તે બળની હૂંફ આપણને સહુને છે. આર્થિક વિકાસની હોડમાં ઘણી સામાજિક બાબતો ભુલાઈ ગઈ છે. એ સંદર્ભમાં Social Reconstruction of Gender આ વિષય આજના વાર્તાલાપ માટે ખૂબ ઉપયુક્ત છે. ડૉ. કૃષ્ણાબેન આજીવન એના માટે મથતા રહ્યાં.

શ્રીમતી લલિતા કૃષ્ણાસ્વામીએ પ્રો. કૃષ્ણા અહુજાપટેલનો પરિચય આપતાં કહ્યું કે પ્રો. કૃષ્ણાબહેન બાળપણથી જ જુદા પ્રકારનું વ્યક્તિત્વ ધરાવતા હતા. તેમણે જણાવ્યું કે તે વકીલ, પત્રકાર, શિક્ષક, સામાજિક કાર્યકર્તા અને શાંતિના દૂત હતા. સામાજિક ન્યાય અને મહિલાઓના અધિકારો માટે સમયથી આગળ

વિચારતાં હતાં. ૧૭ વર્ષની ઉંમરમાં બોમ્બેથી લંડન ભણવા માટે ગયાં હતાં. તે દૃઢ નિશ્ચયી હતા. કેટલીક મુશ્કેલીઓ હોવા છતાં પણ પોતાના ધ્યેયને પૂરું કર્યા પછી આંતરરાષ્ટ્રીય શ્રમ સંસ્થાનમાં નોકરી માટે જોડાયા અને સંયુક્ત રાષ્ટ્રસંઘમાં અનેકવાર મહિલાઓના અધિકારો માટે રજૂઆત કરી હતી.

અતિથિ તરીકે ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ અમદાવાદના કુલનાયક ડૉ. રાજેન્દ્ર ખીમાણીએ કહ્યું કે ગાંધીએ Social Reconstruction of Gender માટે બહુ જ કામ કર્યું હતું. મહિલાઓને સશક્ત અને નીડર બનાવવા માટે રાષ્ટ્રીય આંદોલનોમાં નેતૃત્વ આપ્યું હતું. 'સ્વ'થી શરૂ કરીને પરિવાર, મહોલ્લા, ગામ, રાજ્ય, દેશ અને આંતરરાષ્ટ્રીય સ્તર પર મહિલાઓ પર થતી હિંસાને દૂર કરવાના પ્રયાસ કરીએ તો સમાજ અહિંસક થઈ શકશે.

એડવોકેટ ડૉ. અમી યાજ્ઞિક જે પ્રખર વકીલ, રાજ્યસભાના સદસ્ય અને વિલ્ડ ઈન્ડિયા સેક્શનના ચેર પર્સન છે, અને ગરીબ મહિલાઓ માટે નિઃશુલ્ક વકીલાત કરે છે, અને આવી બહેનોને આર્થિક, માનસિક, સામાજિક સ્તરથી મદદ પણ કરે છે, તેમને મહિલાઓના કાનૂની અધિકારોની જાણકારી આપવાની વાત કહી અને પ્રો. કૃષ્ણા આહુજાપટેલને કર્માજલિ આપી.

આ સ્મૃતિ વ્યાખ્યાનના મુખ્ય વક્તા પ્રો.આશા શુક્લાએ (ડૉ.આંબેડકર સામાજિક વિજ્ઞાન વિશ્વવિદ્યાલય મહુના કુલપતિ) એ મહિલાઓના અનેક પ્રશ્નોની રજૂઆત કરી અને મહિલાઓ અને પુરુષોના સમાન હકની વાત કરી. Gender Equalityના સંદર્ભમાં તેમણે જેન્ડર સંવેદનશીલતાની જરૂરિયાત પર ભાર મૂક્યો. Gender Reconstructionમાં સ્ત્રી-પુરુષના વિરોધની નહીં પણ આપસમાં સહયોગની વાત છે.

સ્મૃતિ વ્યાખ્યાનમાં કાર્યક્રમના અધ્યક્ષ ડૉ. અમી ઉપાધ્યાયે (કુલપતિ, ડૉ. બાબા સાહેબ આંબેડકર ઓપન વિશ્વવિદ્યાલય, અમદાવાદ) કહ્યું કે જ્યારે આપણે છોકરા-છોકરીઓની શારીરિક રચના અને સામાજિક, આર્થિક, સાંસ્કૃતિક અવધારણાની ચર્ચા કરીએ છીએ, ત્યારે સમજવું જોઈએ કે સ્ત્રી-પુરુષનું સ્ત્રી-પુરુષની સમાન ભાગીદારી અને સહયોગની વાત ખૂબ મહત્વની છે. Genderને ફરી નવી નજરથી જોવું જોઈએ અને મહિલાઓની સાંસ્કૃતિક, સામાજિક, આર્થિક અને ઐતિહાસિક ભૂમિકાની અવધારણાઓને પણ ફરી નવેસરથી ચર્ચવી જોઈએ. તો જ આપણે આ મુદ્દે આગળ વધી શકીશું.

પ્રો.(ડૉ) પુષ્પા મોતિયાની (સેક્રેટરી વિલ્ફ ઈડિયા)એ ડૉ. કૃષ્ણા આહુજાને શ્રદ્ધાંજલિ આપતાં કહ્યું કે, ૬ ઓગસ્ટ, ૧૯૪૫માં જાપાનના હિરોશીમા પર થયેલા બોમ્બ હુમલાને પણ યાદ કર્યો. અને પ્રો. કૃષ્ણા આહુજા પટેલની કર્મશીલતામાં માનતા હતા. Wilpfના કામ દ્વારા એમને કર્માંજલિ આપવાનો પ્રયાસ કરી રહી છું.

૫.૨ એક અનોખી શાળા

આસામના એક ગામમાં મજીત અને પરમિતા (પતિ-પત્ની) એ શિક્ષણનો એક અભિનવ પ્રયોગ કર્યો છે. આ દંપતીએ ઉત્તર પૂર્વના આ રાજ્યમાં એક નાનકડા ગામ પામોહીનાં જંગલોમાં ૨૦૧૬માં “અક્ષર” નામે શાળા શરૂ કરી. એની વિશેષતા એ છે કે બાળકો શાળામાં રોજ પ્લાસ્ટિક કચરાને લઈને આવે છે. શાળા એને ફી રૂપે જમા લે છે અને છોકરાઓને શાળામાં દાખલ કરે છે. મફત શિક્ષણ આપવાના ખ્યાલથી આવેલા આ દંપતીએ જોયું કે નિરક્ષરતા કરતાં પણ વધારે મોટી કટોકટી આ લીલાછમ વિસ્તારમાં પ્લાસ્ટિકના કચરાએ સર્જી છે. ગામમાં ઠંડીથી રક્ષણ માટે પ્લાસ્ટિક કચરો ઠેર ઠેર બાળવામાં આવતો હતો. એના ધુમાડા વર્ગખંડમાં જઈ બાળકોને આરોગ્યને હાનિ કરતા હતા. આને અટકાવવાનો એક જ રસ્તો હતો. પ્લાસ્ટિક કચરો શાળામાં એકત્ર કરવો.

પણ શાળામાં તો છોકરાઓ જતા જ નહોતા પથ્થરની ખાણોમાં કામ કરતાં આ છોકરાંઓને શાળામાં આવતા કરવા માટે ખાણકામના ૧૫૦ રૂ. જેટલી વૈકલ્પિક આવક ઊભી કરવી પડે, જે આ દંપતી માટે શક્ય ન હતું. આથી એમણે ઘરે ઘરે જઈને ભણાવવાનું નક્કી કર્યું. અને પછી સિનિયર છોકરાઓ એમનાથી નાનાને શીખવે એવી અનૌપચારિક પદ્ધતિએ કામ શરૂ કર્યું. બાળકો પાસેથી પ્લાસ્ટિક મંગાવી બદલામાં એને ટોકન આપ્યા, જેને આધારે તે ચોપડા, દફતર, ખાવાનું, રમકડા, બુટ વગેરે ખરીદી શકે. આ સાથે સાથે સમુદાયમાં પ્લાસ્ટિકનાં ભયસ્થાનો બાબતે જાગૃત કરવાનું કામ પણ કર્યું.

બીજા તબક્કે આ પ્લાસ્ટિક કચરાને ગામમાં જ રીસાઈકલ કરવાનું નક્કી કર્યું અને ગામની બહેનોને આ શીખવા તૈયાર કર્યા. એમાંથી બાંધકામમાં ઉપયોગી બ્લોકસ અને અન્ય ઉત્પાદનો બનાવતાં શીખ્યા. દરેક બાળક અઠવાડિયામાં ઓછામાં ઓછી ૨૫ પ્લાસ્ટિકની નકામી વસ્તુઓ લાવે છે, જે સમુદાય અને વાતાવરણ બંનેને વિકસાવવામાં મદદરૂપ થાય છે.

બીજી બાજુ શાળાનો અભ્યાસક્રમ જુદી રીતે બનાવ્યો. ત્યાના પ્રશ્નો, ત્યાંની જરૂરિયાતોનો આ અભ્યાસક્રમમાં સમાવેશ કરવામાં આવ્યો. અક્ષરજ્ઞાન અને વ્યાવસાયિક શિક્ષણ વચ્ચેનું અંતર ઓછું કર્યું.

આ વિશિષ્ટ શાળા છે. એને વર્ગખંડો નથી. છોકરાંઓ ખુલ્લામાં ભણે છે. બાળકને એની સમજના સ્તર પ્રમાણે યોગ્ય ધોરણમાં દાખલ કરવામાં આવે છે. આથી જુદી જુદી ઉમરવાળા બાળકો એક વર્ગમાં જોવા મળે છે. શિક્ષણમાં જીવનમૂલ્યો, વિષયજ્ઞાન અને કૌશલ્ય નિર્માણને એકસરખું મહત્વ આપવામાં આવ્યું છે.

૫.૩ આગામી આંતરરાષ્ટ્રીય પરિષદ

ઈ-શિક્ષણ, ઈ-વ્યવસાય, ઈ-વ્યવસ્થાપન અને ઈ-લર્નિંગ પર આંતરરાષ્ટ્રીય પરિષદ

વિવિધ વિશ્વવિદ્યાલયો અને ઔદ્યોગિક સંસ્થાઓના વૈજ્ઞાનિકો, શિક્ષણશાસ્ત્રી, એન્જિનીયરો, વિદ્યાર્થીઓ અને સંશોધનમાં જોડાયેલ તમામ મહાનુભવોને એક સાથે એક પ્લેટફોર્મ પર લાવવાનું આ પરિષદનું મુખ્ય ધ્યેય છે. વિશ્વવિદ્યાલયો અને ઔદ્યોગિક એકમોમાં તાલમેલ અને જોડાણ થાય અને ભવિષ્યમાં ઔદ્યોગિક એકમો બંધાય અને નવી વિશ્વવિદ્યાલયો સાથે ઔદ્યોગિક એકમો સંશોધનો માટે વધારે સ્થિર અને મજબૂત સંબંધો બાંધે અને નવી ઊંચાઈઓ સુધી બંને ક્ષેત્ર પહોંચી શકે એવા ઉદ્દેશથી આ પરિષદ બોલાવી છે. આ પરિષદનું આયોજન ઘ ઈન્સ્ટિટ્યૂટ ઓફ રીસર્ચ એન્જિનિયર્સ એન્ડ સાયન્ટિસ્ટ દ્વારા કરેલ છે.

- સંપર્ક વ્યક્તિ : પરિષદ સંયોજક
- ઈમેઈલ આઈ ડી : info@theires.org
- પરિષદ ID : ACA602794
- વેબસાઈટ : <http://theires.org/Conference2022/Singapore/1/IC4E/>
- વેબસાઈટ : ૧ નેધરાવોન રોડ, સિંગાપુર - ૫૦૮૫૦૨

અગત્યની તારીખો :

- પેપર જમા કરાવવા છેલ્લી તારીખ : ૧૭ ડિસેમ્બર, ૨૦૨૧
- પરિષદની તારીખ : ૨ થી ૩ જાન્યુઆરી, ૨૦૨૨

૬. પુસ્તક પરિચય

પુસ્તકનું શીર્ષક : શાશ્વત ગાંધીજી, ભાગ-૧, પરસે રૂપ પાવક સો કહીએ
સંપાદક : શ્રી રમેશભાઈ સંઘવી
પ્રકાશક : વનરાજ પટેલ, મીડિયા પબ્લિકેશન
૧૦૩, મંગલમૂર્તિ, કાળવાચોક, જૂનાગઢ

કુલ પાનાંની સંખ્યા : ૨૧૬

કિંમત : રૂ. ૨૫૦.૦૦

ગાંધી એવા ને એવા જ નહીં ચાલે તે સાચું, પણ તેમણે આપેલ જીવનમૂલ્યો, જીવનદષ્ટિ અને જીવનશૈલી વ્યક્તિ, સમષ્ટિ તેમજ સૃષ્ટિના સુખ-શાંતિ માટે, તેના અભિનવ-નૂતન સ્વરૂપે કામ કરતાં કરવા પડશે. પ્રત્યેક વ્યક્તિ પોતાના જીવનમાં તે જે કામ કરે છે, રહે છે ત્યાં જ આ કામ તો કરી શકે છે. જાગૃતિ-સજગતા, ખુલ્લું મન- કરુણા અને પછી પુરુષાર્થ-ક્રિયાશીલતા સાથે, સમજણ અને શાણપણ સાથે બસ જીવવાનું શરૂ કરવાનું છે. તો સ્વ, સર્વ અને સમગ્ર સૃષ્ટિનું સૌંદર્ય-ઐશ્વર્ય પ્રગટશે, અનુભવાશે. આ વાત રમેશભાઈ સંઘવીએ એમના દ્વારા પ્રકાશિત ‘અકાલ પુરુષ’ નામના સામયિકમાં કરી છે ગાંધીવિચારને ગાંઠે બાંધીને સમાજને ગાંધીવિચારનું નિતનવું ભાથું મળતું રહે એવા પ્રયત્નો શરીરની અનેક મર્યાદાઓ હોવા છતાં શ્રી સંઘવી અવિરત કરતાં રહ્યાં છે.

મહાત્મા ગાંધીની ૧૫૦મી જન્મજયંતીએ, ‘શાશ્વત ગાંધી’નાં પૃષ્ઠોમાં ફેલાયેલા નિત્ય પઠનીય લેખોને પુસ્તકો રૂપે મૂકવાનું એમને મન થયું. ૨૦૧૧થી શાશ્વત ગાંધી નામે માસિકપત્ર શરૂ કરી, ૬૪ અંકોના ૩૦૦૦થી પણ વધારે પૃષ્ઠોમાં દેશ-વિદેશના ચિંતકો, કર્મશીલો, અભ્યાસીઓ, સંશોધકો, વિવિધ ક્ષેત્રના અગ્રણીઓના સુંદર અભ્યાસપૂર્ણ લેખો મૂક્યા. તેમાંથી પસંદ કરીને ‘શાશ્વત ગાંધી’ પુસ્તક પંચામૃત સ્વરૂપે પાંચ ભાગમાં આપ્યું છે.

પહેલા ભાગનું નામ છે ‘પરસે રૂપ પારસ સો કહીએ!’ એમાં ૩૬ લેખો પસંદ કરવામાં આવ્યા છે.

આ ભાગમાં પહેલો લેખ ડૉ. હરિપ્રસાદ દેસાઈનો છે, જેમાં ગાંધીજીએ અમદાવાદમાં કોચરબ આશ્રમ સ્થાપ્યો, ત્યારે કેટલાંક અવનવા અનુભવો થયા તેની વાત તેમજ શરૂઆતના દિવસોમાં હરિપ્રસાદભાઈને ગાંધીજી સાથે

જે મતભેદો થયા, તે અંગે ચર્ચા કરી છે. ખાસ ઉલ્લેખ કરવો ઘટે જયસુખલાલ મહેતાના લેખનો. જેમાં જહાંગીર બમનજી પીટીટના બંગલે મોટા મેળાવડામાં ગાંધીજી કાઠિયાવાડી પહેરવેશમાં હાજર રહ્યા. ફિરોજશાહ મહેતાએ ગાંધીજીનો હાથ ઝાલી બધે ફેરવ્યા ત્યારે જ મુંબઈના માલેતુજીર મેળાવડાને ખાતરી થઈ ગઈ કે આ પુરુષ કોઈ સાધારણ ગામડિયો નથી.

નવ બહેનોએ પોતાના વ્યક્તિત્વના વિકાસમાં બાપુનો કેવો અમૂલ્ય ફાળો હતો તેની વિગતે વાત લખી છે અને બધી બહેનોએ આઝાદીના જંગમાં કઈ રીતે ઝંપલાવ્યું તેની રસપ્રદ વાતો જણાવી છે.

મહારાષ્ટ્રના પ્રિય લેખક પુ. લ. ભાગવતે પહેલીવાર ગાંધીને સાંભળ્યા ત્યારે તેમની વકૃત્વકળાથી પ્રભાવિત થયા નહોતા. પણ તેમને લાગ્યું કે આ કાંતિમાન શરીરમાં જે આત્મા છે એ આત્મા મારા આત્મા સાથે અને અન્યોના આત્મા સાથે સંવાદ સાધે છે. મીસીસ પોલાકના લંડનના અનુભવો, દ. આફ્રિકામાં મીર આલમનો પ્રસંગ, કાકાસાહેબના લેખમાં ૧૯૪૧-૪૨ની લડતની વાતો તેમજ ચંદ્રશેખર ધર્માધિકારીએ ‘ગાંધીવધની જે વાત કરી છે, તે વાચકને રસ તરબોળ કરનારી છે.

છેલ્લે આ બધી વાતના પરિપાક રૂપે મહેન્દ્રભાઈ ભટ્ટનો લેખ છે, જેમાં ચેતનાના ઊર્ધ્વાકરણની વાત કરી છે. આખો લેખ ખૂબ ચિંતનશીલ, મનનશીલ છે. તેમાં ગાંધી વિશે લખ્યું છે કે ‘માનવીય ચેતનાને અવરુદ્ધ કરનારી જીવનશૈલી, શાસ્ત્રો અને તંત્રો જે સામ્રાજ્યવાદમાં પ્રસરેલા તે ગાંધીની વિશુદ્ધ ચેતનાને બહુ સ્પષ્ટ દેખાઈ ગયેલા. પોરબંદરથી આરંભાયેલી નવજીવન ખોજ કમશ: દક્ષિણ આફ્રિકાના સત્યાગ્રહ રૂપે આગળ વધી છે. હિંદસ્વરાજમાં એ તમતમતા શબ્દોમાં પ્રગટેલી. ભારતમાં આવીને સામૂહિક સાધના અને સ્વાતંત્ર્યસંગ્રામ માટેના સૈનિકો તૈયાર કરવામાં એ લાગે છે. સત્ય અને અહિંસાની પ્રચંડ અને છતાંયે સર્વ જન હિતાય – સંવેદના શક્તિનો અનુભવ ભારતને જ નહિ સમગ્ર વિશ્વને થાય છે.

આ રીતે ૨૧૪ પાનાંમાં ગાંધીજીવનના અનેક પાસાંઓ પ્રસંગોને આવરી લેતું આ પુસ્તક આપણી સમજણને સ્પષ્ટ કરનારું, વધારનારું, વિકસાવનારું છે.

- ભદ્રા સવાઈ*

* પ્રા. ભદ્રાબહેન સવાઈ, ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના શાંતિસંશોધન કેન્દ્રનાં નિવૃત્ત પ્રધ્યાપિકા

૭. આગામી કાર્યક્રમો

૭.૧. રંગોળી હરીહાઈ

ભારતીય સમુદાય શિક્ષણ દ્વારા દર વર્ષે દિવાળીના પર્વ નિમિત્તે રંગોળી હરીફાઈનું આયોજન કરવામાં આવે છે. દિવાળીનો તહેવાર એટલે રોશનીથી ઘરને ઝગમગાટ કરીને અંધકારને દૂર કરવાનું પર્વ. તેમાંય વર્ષોથી દિવાળીના તહેવારમાં ઘરે ઘરે આંગણામાં સુંદર મજાની રંગોળી દોરવાની પરંપરા છે. કોરોના મહામારીના કારણે આ હરીફાઈ ઓનલાઈન રાખવામાં આવી છે. જે તા. ૫,૬ નવેમ્બર, ૨૦૨૧ દરમ્યાન રાખેલ છે, આમાં ભાગ લેવાની ઈચ્છા હોય તેમને શરૂઆત અને અંત સમયના બે ફોટા અને એક વીડિયો ૯૪૨૯૯૩૫૮૩૦ વોટ્સઅપ પર મોકલવાનો રહેશે. આ હરીફાઈમાં ગૃહિણી, વિદ્યાર્થી, યુવાનો, શિક્ષકો કે અન્ય કોઈપણ ભાગ લઈ શકશે. નિર્ણાયકો દ્વારા પસંદ કરેલ ત્રણ શ્રેષ્ઠ રંગોળીને રૂપિયા ૧૦૦૦/-, ૭૫૦/-, અને ૫૦૦/- નું રોકડ ઈનામ આપવામાં આવશે.

૭.૨ પ્રશ્નોત્તરી (લોકવિજ્ઞાન)

સામાન્ય લોકોમાં વિજ્ઞાનની જાણકારી વધે તે હેતુસર તા. ૨૧મી નવેમ્બર-૨૦૨૧ દરમ્યાન વિજ્ઞાન સંદર્ભે ઓનલાઈન પ્રશ્નોત્તરીનો કાર્યક્રમ રાખવામાં આવશે. આમાં ભાગ લેવા માટે ગુગલડોક પર પ્રવેશપત્રક મુકવામાં આવશે. રસ ધરાવતાં યુવાનો, ગૃહિણીઓ, વ્યાવસાયિકોએ તા. ૨૧/૧૧/૨૦૨૧થી ૨૩/૧૧/૨૦૨૧ સુધીમાં પ્રવેશ પત્રક ભરીને મોકલવાનું રહેશે. જો આપ કોઈને આ કાર્યક્રમમાં ભાગ લેવાની ઈચ્છા હોય તો અમને ફોન કે ઈમેલ મારફતે જાણ કરવા વિનંતી, જેથી આપને લિંક મોકલી શકીએ આ માટે આપનો વોટ્સઅપ નંબર કે ઈમેઈલ આઈડી આપવા વિનંતી. આ કાર્યક્રમની વિગત Isce House ફેસબુક પર મૂકવામાં આવશે.

(...અનુસંધાન પૃ.૨નું ચાલુ)

common man, to the peasants & workers of India, to fight and end poverty, ignorance and disease, to build up a prosperous, democratic and progressive nation, and to create social, economic and political institutions which will ensure justice and fullness to life to every man and woman.” જવાહરલાલ નેહરુ કે ગાંધીજીના સેવેલ સ્વપ્નમાં આ દેશની જનતાનો અવાજ છે અને એટલે જ ભારતની આઝાદીનાં પંચોતેર વર્ષના લેખાં-જોખાં એના સંદર્ભમાં જ થઈ શકે. સરકારના અંદાજો

પ્રમાણે છેલ્લાં ૧૦ વર્ષમાં ગરીબી રેખામાંથી આપણે ૨૭ કરોડ લોકોને બહાર લઈ આવ્યા પણ કોરોના મહામારીએ તાજેતરમાં જ આ દેશના મોટા વર્ગની ગરીબીનું વરવું રૂપ તાદ્દશ કર્યું. અને ગરીબોની સંખ્યામાં ૯.૪ કરોડનો ઉમેરો થયો છે. આજે પણ સંયુક્ત રાષ્ટ્રસંઘના હેવાલ પ્રમાણે ૨૮ કરોડ લોકો ગરીબી રેખા નીચે જીવે છે. Down to Earth ના એક હેવાલ પ્રમાણે બેરોજગારીનો પ્રશ્ન ત્યાં ને ત્યાં જ છે. માનવશ્રમનું ગૌરવ આપણે કરી શક્યા નથી અને એટલે વ્હાઈટ અને બ્લ્યુ કોલર વચ્ચેનો તફાવત એટલો જ મોટો રહ્યો છે જેટલો બ્રિટિશ રાજમાં હતો. Oxfam ના સર્વે પ્રમાણે સામાજિક અને આર્થિક અસમાનતા વધ્યા છે. ગામડાં તૂટતાં જાય છે અને સ્વાવલંબી/આત્મનિર્ભર થવાને બદલે પરાવલંબી થતાં જાય છે. ખેતીની સ્થિતિ બદથી બદતર થઈ છે અને આ જ નીતિ ચાલુ રહી તો ખેતીને આજીવિકાના સાધન તરીકે પ્રયોજવાનું ખેડૂતો છોડી દેશે અને ત્યારે દેશનું શું થશે એની કલ્પના પણ કરવી મુશ્કેલ છે. મનરેગાથી તમે કેટલી રોજગારી સર્જી શકાય તે પણ તપાસ અને સમજનો વિષય છે. હિંસા, અવિશ્વાસ અને બળ પ્રયોગ વધતા જાય છે. શોષણને ક્યાંય આપણે નાથી શક્યા નથી. બહાનાં અને ક્ષેત્રો પણ વધતાં જાય છે. કાયદાનું શાસન નથી સ્થપાયું, કાયદો બધાને સમાન રીતે જુએ છે, એવો પ્રજામાં વિશ્વાસ ઊભો નથી થયો. ભારતીય સંસ્કૃતિ અને સંસ્કારની વાતો મનની સંકડાશ વધારતી જાય છે શિક્ષણને જીવન સાથે જોડી શકાયું નથી. પર્યાવરણીય ફેરફારો અને એની માઠી અસરો રોજે રોજ ભોગવાય છે. આરોગ્ય, શિક્ષણ અને બેંકિંગ જેવી સુવિધા બધા સુધી પહોંચી નથી. દરેક નાગરિકને ગૌરવાન્વિત જીવન હજી બક્ષી શક્યા નથી. સ્વચ્છતા અને સેનિટેશન, હજી ઘણા લોકોથી વેગળાં છે. આ અને આવા ઘણા અધૂરા પ્રયાસો જોવા મળે છે.

જરૂર છે આજે, આપણી નીતિઓને bottom of the pyramid સુધી લઈ જવાની. વિકાસની આંધળી દોડને થોડી થંભાવી નવેસરથી વિકાસને વ્યાખ્યાયિત કરવાની આપણી શક્તિ અને સંવેદનાને સંકોચવાની, ગામડાને શહેરમાં પરિવર્તિત થતા રોકવાની, ભારતના ૭૫મા વર્ષે ઉજવણી કરીએ, નિશ્ચિતપણે કરીએ. પણ ફરી એકવાર ગાંધીજીના નેતૃત્વમાં એમણે દર્શાવેલ પથ પર ચાલી જોવાનો પ્રયાસ કરીએ. ગાંધીવિચારને એક તક આપીએ. આ એક જ વિચારધારા ભારતને અને માનવજાતને આવનાર ભયસ્થાનો સામે રક્ષણ આપી શકશે. આપણે કુદરતને સાનુકૂળ થઈએ અને ધરમૂળમાંથી ફેરફાર કરવા સજ્જ થઈએ. દેશને સમર્પિત થવાની આ જ રીત છે. દેશાભિમાન અને સ્વાભિમાન આમાં જ નિહીત છે. આઝાદીનાં ૭૫ વર્ષે આ વાત સમજી શકીએ તો જ આપણી સ્વતંત્રતાને અને આપણા અસ્તિત્વને ટકાવી શકીશું. — મંદા પરીખ

કવિતા - ૧

દુઃખદ ભારતની દુર્દશા કેમ વર્ણવું મહાત્મા,
ધાયલ ભારત તને પુકારે છે ફરી અવતરવા.
ફાટી નીકળી છે આંધળી રાજકારણની આંધી,
દેશની ધરા વીનવે હવે તું અવતર ગાંધી.
અંગ્રેજીની સંસ્કૃતિ રાજ કરે છે 'બેફામ',
માતૃભાષા તો જાણે હવે વીસરતી જાય છે.
ન્યાયની હાર અને અન્યાય જીતતો જાય છે,
ગરીબની હાય ક્યાંક આ પૈસા લેતો જાય છે.
હિંદને સજીવન કરવા ફરી ગાંધી જોઈએ,
અંધાધંધ રાજકારણને મારવા ફરી ગાંધી જોઈએ.
અગિયાર વ્રતો હવે પુસ્તકમાં ધૂળ ખાય છે,
તારા નામે ક્યાંક લોકો રાજકારણ રમી જાય છે.

- રિંકલ એચ. વાડદોરીયા

ગાંધીજી પર એક પ્રેરણાદાયક કવિતા

તુમને હી દેશ કો સત્ય ઓર અહિંસા કા પાઠ પઢાયા ।
અપની સચ્ચાઈ કે બલ પર, ગોરોં કો દેશ સે દૂર ભગાયા ॥
સચ ઓર એકતા કી તાકત કે આગે, તોપોં કી હિમ્મત હારી થી ।
ભારત છોડો - ભારત છોડો, હર કોને સે યહી આવાજ જાગી થી ॥
ચરખા નિત્ય ચલાતે થે, રુઈ સે સૂત બનાતે થે ।
સ્વદેશી અપનાઓં, સબકો યહી સિખાતે થે ॥
उनका कहेना था, जितना जरुरी है ईश्वर की भक्ति ।
उतना ही जरुरी है, जीवन में स्वच्छता और सादगी ॥
ગાંધીજી સચ હી તો કહતે થે,
સચ્ચાઈ કી રાહ પર ચલકર, બુરાઈ સે લડ સકતે હોં ।
अगर जब्बा है,
तो तुम अकेले ही, दुनिया बदल सकते हो ॥

- પરમાર ચિંતલબહેન મહેન્દ્રસિંહ

વાચકોને વિનંતી

૧. સમુદાય શિક્ષણના ક્ષેત્રે
આવી રહેલ જ્ઞાનયુગને ધ્યાનમાં
રાખી અનેકવિધ નવતર પ્રયોગો
અને કાર્યક્રમો કરતી આ સંસ્થાને
વધુ મજબૂત બનાવવા માટે
આપનો સહકાર અમૂલ્ય છે. જો
આપ આ સંસ્થાના સભ્ય ન હો તો
વ્યક્તિગત આજીવન સભ્ય ફી રૂ.
૧,૦૦૦/-, સંસ્થા અથવા
યુનિવર્સિટી માટેની સભ્ય ફી
રૂ. ૨,૫૦૦/- સંસ્થાના સરનામે
તાત્કાલિક મોકલી આપવા વિનંતી.
આ ઉપરાંત સંસ્થા વિશેની કોઈ
પણ માહિતીની જો આવશ્યકતા
હોય તો અમારો સંપર્ક કરશો.

૨. જો આપ આ સંસ્થાના
આજીવન સભ્ય હો તો આપના
વિશેની સંપૂર્ણ માહિતી (BIO-
DATA) અમને મોકલી આપવા
વિનંતી. એટલે અનુકૂળતાએ
સંસ્થાના મુખપત્ર 'યાત્રાપથ'માં
આપનો પરિચય સમાવી શકાય.

૩. દર ત્રણ મહિને પ્રકાશિત
થતા 'યાત્રાપથ'ના માધ્યમ દ્વારા
સમુદાય શિક્ષણ સાથે આપને
જોડવાનો અમારો નાનકડો પ્રયાસ
છે. 'યાત્રાપથ'નું વાર્ષિક લવાજમ
માત્ર રૂ. ૫૦/- છે. જો આપ આ
મોકલી આપશો તો આપના
આભારી થઈશું.

૪. 'યાત્રાપથ' વિશે આપના
પ્રતિભાવો પણ અમને જરૂરથી
લખી મોકલશો. -તંત્રી

યાત્રાપથ-ગુજરાતી (ત્રિમાસિક) Registered under RNI No. GUJGUJ/2007/23007
Published on 15th of January, April, July and October, Posted at An'd P.S.O. Office

વાર્ષિક લવાજમ રૂ. ૫૦/-
પ્રતિ નકલ : રૂ. ૧૫/-

Year : 14 Issue No. 4
July - September - 2021

YATRAPH
INDIAN SOCIETY FOR
COMMUNITY EDUCATION
OFF ASHRAM ROAD,
NAVJIVAN PRESS ROAD,
AHMEDABAD-380014

Printed and Published by : Mayank Chandrakantbhai Upadhyay on behalf of 'Indian Society For
Community Education. Printed at : Arth Computer, 203, Maurya Complex, Opp. C.U.Shah College,
Income Tax, Ashram Road, Ahmedabad-380014
Published at Ahmedabad.

Editor : Manda Parikh